श्री स्वामिनारायण

February '08 Rs. 5/-



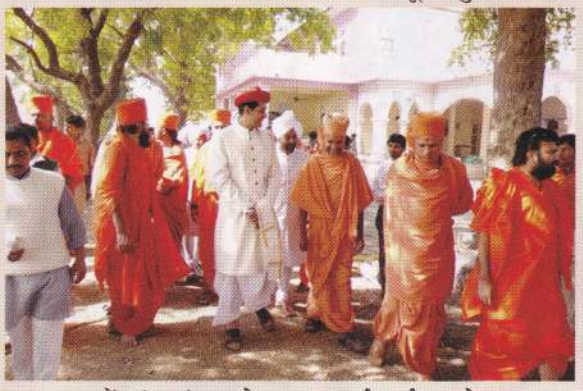
ગઢપુર શ્રી ગોપીનાથજી હરિકૃષ્ણ મહારાજની આરતી ઉતારતા શ્રીહરિના ત્રણે અપર સ્વરૂપો

गढपुर श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारते हुए श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूप

પ્રકાશકઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



चराडवा मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से शाकोत्सव सम्पन्न



गढपुर में संत मंडल के साथ दर्शनार्थ पधारे हुए
प.पू. आचार्य महाराजश्री



गोविंदपुरा (वेडा) शाकोत्सव प्रसंग पर सभा में प्रसन्न
होकर आशीर्वाद देते हुए पू. महाराजश्री



महेसाणा मंदिर में ''खीचड़ी उत्सव'' प्रसंग
पर पू. महाराजश्री का आशीर्वचन



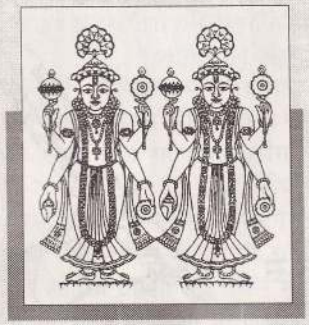
डांगरवा (पाटीदार) मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारते हुए
पू. लालजी महाराजश्री



महेसाणा श्री नन्दुभाई पटेल (मोटपवाला) के यहाँ
विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री



जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर के पारायण प्रसंग पर प.पू. बड़े
महाराजश्री के उपस्थित में उद्‌बोधन करते हुए घनश्याम स्वामी



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरूपदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 1 | अंक : 10 | फरवरी -2008

अनुक्रमणिका

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	आनंदनी हेली : आनन्द की लहर	४
४.	हे युवानो !!	५
५.	चरण सुरव	६
६.	वचनामृत-कारीयाणी	८
७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम	९
८.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीना दिव्य विदेश प्रवास	११
९.	सत्संग सुरभि : "सुरव के सूर्य बनकर आये सहजानंद"	१४
१०.	सत्संग बालवाटिका	१५
	(१) आप कब निवृत्ति लेंगे	
	(२) साधु में सुना हुआ काम लगा	
११.	भक्तिसुधा	१७
	(१) हम आपको ही जगाते है	
	(२) महाराज की मूर्ति का ध्यान	
१२.	प्रश्नपेटी	२०
१३.	समाचार वृत्तांत	२१

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



तन्त्रीश्री की तरफ से.....

शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज ने प्रतिदिन मंदिर जाने की आज्ञा की है वहाँ जब भगवान का दर्शन करें उस समय एकाग्रमन से दर्शन करना चाहिये । दर्शन के समय दृष्टि को ऊपर नीचे नहीं करनी चाहिये । कोई दर्शन के लिये गया हो तो उसके साथ वात भी नहीं करनी चाहिये । जैसे कोई मनमोहक वस्तुको प्रथम देखने के बाद मन आकर्षित हो जाता है । ठीक इसी तरह अपनी एकाग्र वृत्ति द्वारा प्रभु के दर्शन में मन लगाना चाहिये । इस मूर्ति में महाराज साक्षात् विद्यमान है, अगल बगल सेवामें मुक्त लोग खड़े हैं । मूर्ति में से अनेकों सूर्य की आभा फैल रही है । चरण कमल से लेकर प्रत्येक अंगो का दर्शन करते हुए नेत्र तक पहुँचने पर अपलक दृष्टि होजानी चाहिये । भगवान के अलंकारो का वस्त्रो का पुष्पहारों का, मस्तक पर पगड़ी का इतनी तन्मयता से दर्शन करे कि वही स्म हृदयाकाश में सदा के लिये उतर जाय । जितना समय हो उतने समय तक यह भाव रखना चाहिये । ऐसा लगने लगे कि महाराज की मुलाकात प्रथमवार हुई है ऐसी तीव्रता, आतुरता, उत्सुकता होनी चाहिये । प्रतिदिन प्रभु के प्रति यह भाव बढते ही रहना चाहिये । दर्शन करके प्रदक्षिणा करते समय यह भाव होना चाहिये कि प्रभु मुक्तों के साथ विराजमान हैं । दाहिने क्रम से प्रदक्षिणा करनी चाहिये । बाद में इस भाव से साष्टांग प्रणाम करना चाहिये कि महाराज सामने खड़े है । पुस्र के लिये साष्टांग प्रणाम करने का विधान है महिलाओं को पंचाग प्रणाम करना चाहिये । प्रणाम करते समय प्रभु के चरण पर मेरा मस्तक है यह भाव होना चाहिये । दर्शन करते समय आप आगे हों या मध्य में या पीछे हों कही भी हों दर्शन से मतलब होना चाहिये । भगवान तो सभी को समान प्रेम देते हैं । व्यवस्थापक तो व्यवस्था आगे क्रम में दर्शन की व्यवस्था देंगे लेकिन आप का भाव क्या है उसे परमात्मा परख लेगा और स्वीकार भी करेगा ।

दर्शन के आनंद की याद करते हुए महाराज की मूर्ति का स्मरण करते हुए मंदिर के ध्वज का एवं कलश का दर्शन करके, नमस्कार करके, यथाशक्ति भेंट अर्पण करके अपने घरजाना चाहिये । मंदिर में मूर्ति का कोई भी स्वस्म हो इसमें अपने इष्टदेव सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण का ही भाव होना चाहिये ।

मंदिर में दर्शन के बाद कथा वार्ता सुने विना घर नहीं जाना चाहियें । यदि कथा सुनने का समय न हो तो कीर्तन में अवश्य बैठना चाहिये । कथा या कीर्तन विना दर्शन पूर्ण नहीं कहा जा सकता । इसलिये कथा कीर्तन का आग्रह अवश्य रखना चाहिये । शिखरी मंदिर हो या हरि मंदिर हो दर्शन करने जांय तो यही भाव रखें । जिस प्रकार का दर्शन किये हों उसका सम्पूर्ण दिनभर स्मरण बना रहना चाहिये । यदि स्मरण भूल जाय तो पुनः दर्शन करने जाना चाहिये ।

श्रीहरिने सारंगपुर के दूसरे वचनामृत में इस वात की चर्चा की है । इसलिये अपने श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका के वांचने वालो से सविनय अनुरोध है कि वे प्रतिदिन दर्शन करने अवश्य आवें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- साधु नारायणस्वरूपदास का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जनवरी -२००८

१. काशीन्द्रा गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

५-६. मुम्बई विलेपार्ले भुज (कच्छ) मंदिर संचालित श्री स्वामिनारायण विश्रांति भवन-ठाकुरजी के दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पधारे ।

७. वेड़ा (गोविंदपुरा) गाँव में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

८. मूली में प्रसादी की ज्ञान बावली में शाकोत्सव अपने हाथों से किये ।

९. बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में धून प्रसंग पर पदार्पण ।
बालवा गाँव में श्री अंबालाल छगनलाल पुंजाजी चौधरी की तरफ से आयोजित शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१०. चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

११. महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१२. राजपुर (कड़ी) गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. कोटक फार्म घुमा गाँव में पदार्पण ।

१५. अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास के धुन की पूर्णाहुति अपने वरद् हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न किये ।
श्री रसिकभाई दयालभाई सोनी (माणके ज्वेलर्स वाला) के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।
श्री दीपकभाई घनश्यामभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा ।

१६. मोटेरा गाँव में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।
श्री हर्षदभाई एल. पाटडिया के यहाँ पदार्पण, रतनपोल ।
श्री कमलेशकुमार वी. सोनी के यहाँ पदार्पण, रतनपोल ।

१७. श्री किशोरभाई मकवाणा के रोटी फिल्ट एन्जी. प्रा. लि. में पदार्पण, वटवा ।
श्री भीखाभाई शिवरामभाई प्रजापति के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, चांदखेड़ा ।
श्री धीरजकुमार रतिलाल ठक्कर के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, ओढव ।

१८. नवावाड़ज श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१९. संत दीक्षा विधि अपने वरद हाथों से किये ।

२०. गुलाबपुरा गाँव में श्री गांडाभाई कालीदास पटेल आयोजित पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में पदार्पण ।

२१. वसई डाभला श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी में पदार्पण ।

२३. मोरबी गाँव में श्री हसमुखभाई गोरधनभाई पटेल के सीटीजन सिरामिक में श्री हनुमानजी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण । वहीं श्री चंदुभाई दयालभाई राणपरा के यहाँ पदार्पण ।

२४. श्री महेशभाई बाबूभाई पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, शाहीबाग ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर अडालज में शाकोत्सव प्रसंग पर तथा श्री स्वामिनारायण वाड़ी के भूमिपूजन प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री भरतभाई अंबालाल पटेल के यहाँ तथा अन्य हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण, चांदखेड़ा ।

२५. देलवाड़ा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२६. श्री लक्ष्मीचंद मगनलाल ठक्कर के यहाँ पदार्पण ।
जीवराजपार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर वणझर (सरखेज) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. गढपुर श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज, सारंगपुर कष्टभंजन देव तथा कारियाणी मंदिर में दर्शनार्थ पधारे ।

३०. श्री स्वामिनारायण बहनों के मंदिर में चूडा (मूलीदेश) प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

३१. बदपुरा गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

आनंदनी हेली

आनन्द की लहर

- शा. हरिजीवनदास

भगवान की लीला न्यारी है । वे कब कैसा चरित्र करेंगे किसी को पता नहीं । कब हसेंगे, कब उदास होंगे, ये सभी चरित्र कल्याण कारी हैं । गीताजी में कहा है कि -

जन्म कर्म चमे दिव्यं एवं यो वेत्ति तत्वतः ।
त्यकत्वा देह पुनर्जन्म नेति मामेति सोऽर्जुन ॥

भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि जो मेरे दिव्य जन्म कर्म को जानते हैं वे शरीर को छोड़कर पुनः जन्म नहीं लेते हैं । वे भगवान को ही प्राप्त करते हैं ।

हमारे लिये प्रभु की सभी लीलायें दिव्य हैं । एकवार श्रीजी महाराज नाराज हो गये । कोई उनके पास जा सके नहीं । किसी के साथ वात नहीं कर रहे थे । भोजन भी नहीं कर रहे थे । इस तरह दोपहर का दो बज गया परिणाम स्वस्म दादा खाचर के दरबार में कोई भोजन ही नही किया । दादा खाचर के साले नागमाला बहुत मबजूत शरीर के थे । वे डरते हुए महाराज के पास गये लेकिन महाराज का स्म देखकर वापस आ गये । इसी तरह महाराज को रिझाने की अनेकों कोशिष किये फिर भी महाराज प्रसन्न नहीं हुए ।

यह वात दादा खाचर ने ब्रह्मानंद स्वामी को बताई । ब्रह्मानंद स्वामी महाराज को मनाने के लिये अपनी शरीर में भस्म लेपन किये और पैरमे घुंघरु बांधकर, दाढी एवं जटा बढाकर, हाथ में चिमटा लेकर, हाथ में ध्वजा लेकर, महाराज के पास जाकर प्रणाम करते हुए कहने लगे ''नमो सहजानंदाय,नमो मुक्तानंदाय, नमो नित्यानंदाय, नमो नागमालायै, इस प्रकार बोलते हुए स्वामीने मस्तक पर हांडी फोड़ी । बाद में नागमाला की प्रदक्षिणा करके पीछे जिस तरह बोले थे उसी तरह पुनः बोलते हुए मस्तक पर हांडी फोड़े, घुंघरु बजाए, चिमटा बजाये । इसी तरह तीसरी बार नमो सहजानंदाय, नमो नित्यानंदाय, नमो मुक्तानंदाय, नमो नागमालायै बोलते हुए मस्तक पर हांडी फोडे, घुंघरु की आवाज निकाले, चिमटा पीटते हुए जोर से बोले आलेक ..... !

श्रीहरि हंसते हुए कहने लगे ऐसा क्या बोले स्वामी ? स्वामी ने कहा नागमाला का पद बोल रहा हूँ । देखिये न, ये नाग माला किस तरह चलते हुए आ रहे हैं । इस तरह कहकर स्वामी नागमाला को पकड़ने दौड़ते हैं । पकड़कर उनके मस्तक पर बांधी हांडी को फोड़ देते हैं । बाद में प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु यह सब आप के प्रसन्नता के लिये हम किये हैं । अब आप प्रसन्न हो जाय । इस बाबा के ऊपर कृपा करके अपनी थाल का प्रसाद दीजिए । ऐसा कहकर जोर की आवाज के साथ अलक-अलक-अलक की गर्जना करते हुए तांडव नृत्य किये । यह देखकर महाराज खूब प्रसन्न हुए । आनन्दित होकर दरबार में भोजन के लिये पधारे । ब्रह्मानंद स्वामी, गंगाजलिये कूयें पर स्नान करके प्रभु के पास आये, दंडवत प्रणाम किये । महाराज अपनी थाल का प्रसाद देकर कहे कि स्वामी ! इसमें से प्रसाद नागमाला को भी देना । नहीं महाराज ! पुस्वार्थ मेरा है । यह सुनकर महाराज ने नागमाला को बुलवाकर दूसरी प्रसाद की थाली तैयार कराकर दी । इस तरह दरबारगढ में आनंद - आनंद फैल गया ।

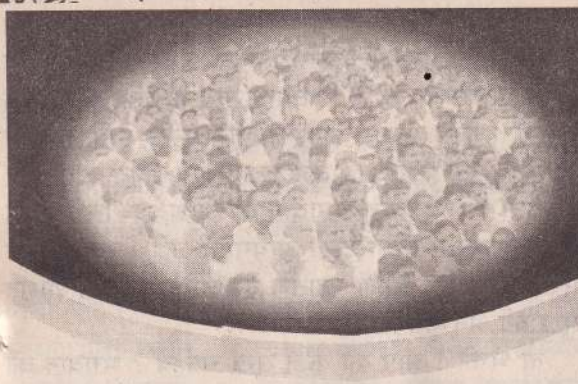
मुंबई शहर में "श्री स्वामिनारायण अंक" का सभ्य बनने के लिये संपर्क

प.पू. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आर्शीवादात्मक आज्ञा से श्री स्वामिनारयण मासिक पत्रिका कालुपुर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर से प्रकाशित होती है । मुंबई शहर में श्रीहरि के अनन्य निष्ठावाले मूल संप्रदाय के हजारों हरिभक्त रहते हैं । जिस में अनेकों भक्तों को इस श्री स्वामिनारायण अंक का सदस्य बनने की इच्छा है । लेकिन वहाँ कोई व्यवस्था नहीं थी, अब प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अधोनिर्दिष्ट हरिभक्तों को श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका का सदस्य बनने के लिये कार्यभार सौंप दिया है । जिस के संपर्क करने से आजीवन सदस्यता शुल्क भरा ज सकता है ।

श्री अपूर्वभाई अनंतराय धोलकिया
श्रीजी डेटा लिन्कस
३०३, चर्चगेट चेम्बर्स, प न्यू मरीयन लाईन्स,
मुंबई-४०० ०३०.
फोन (०२२) ६६३६८६४० (मो.) ९८९२१००८९२

•

श्री गोपालभाई मेघजीभाई टांक (जीरागढवाला)
बी-७०१, हरिधाम बिल्डींग, आर.के. सींगरोड,
आंबावाडी, अंधेरी (इस्ट) मुंबई
मो : ९३२२५८३१५१.



हे युवानो !!

- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

सत्संग में चलती हुई युवक मंडल - बाल मंडल की सभा, शिबिर, सत्संग परीक्षा केन्द्र ये सभी प्रगति के साधन है। दूसरे भी इसी तरह के पुरुषार्थ करें तो प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती रहेगी। इसी तरह हम भी आगे का चिंतन करके प्रयत्न करते हैं। केवल वर्तमान का परिणाम देखकर नहीं अपितु भविष्य का ध्यान करके प्रयत्न करते रहना चाहिये।

हमें प्रत्येक कार्य को समझकर शक्ति के अनुसार सत्संग में अपना समय देना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति अपने समय को कहीं न कहीं लगाता है कोई सामाजिक प्रवृत्ति में, कोई शैक्षिक, कोई गप सप में कितने मजामस्ती में समय विताते हैं, यद्यपि यह हानिकारक है। कितने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्न शील रहते हैं। इसी तरह सत्संग में भी शिबिरों द्वारा, सभाओं द्वारा प्रगति सिद्ध की जा सकती है। इन शिबिरों से मात्र सत्संग को ही पोषण नहीं मिलता बल्कि परिवार को भी पोषण मिलता है, क्योंकि सत्संग पुष्ट होगा तो उसकी असर परिवार पर पड़ेगी और परिवार सुखी होगा। सत्संग का विकास करना हो तो दिन में एकाधबार या सप्ताह में एकाधवार युवा शक्ति को संगठित करके सभा का आयोजन करना चाहिये। समूह में प्रश्नोत्तर करना चाहिये। इससे निराकरण हो जायेगा। एक दूसरे के विचारों का आदान प्रदान होगा। युवान अपने विचारो से निराशा की तिलांजलि देकर सत्संग में उत्तम विचारों द्वारा सर्जनात्मक कार्य करना चाहिये। जो अच्छा न लगता हो उसका विचार ही नहीं करना। प्रत्येक युवान अपने विचारों की सृष्टि का विसर्जन सत्संग की उन्नति के लिये करेंगे तो निश्चित सत्संग महक उठेगा। सत्संग में आगे आने के लिये, अपने जीवन में आगे आने के लिये उत्तम पुस्तकों में से, महापुरुषो के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढेगे तो उत्तम समाज की रचना एवं उत्तम सत्संग की रचना हो सकेगी। जीवन में दुःख के अवसर को भूल कर जो सुख को अनुभव करते हैं उन्हें अवश्य प्रेरणा मिलती है।

यह उत्तम मनुष्य देह मिली है तो अवश्य उत्तम कार्य ही करना चाहिये। इस सत्संग में हम भी प्रयत्न करेंगे तो अवश्य विकास होगा। दुनिया में विकास भी पुरुष प्रयत्न से हुआ है। युवानों में वह शक्ति है, वह चेतना है जो अशक्य को भी शक्य कर सकतें हैं। आप सभी नयी शक्ति का संचार करके श्रीजी महाराज तथा संतो के एवं आचार्य महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त कर सकते हैं। आप जब से जागे तभी से प्रातः मानकर सत्संग में परिश्रम करना चाहिये। आप अपने जीवन में त्याग, परीश्रम आशा, श्रद्धा स्मी ज्योति द्वारा अपने जीवन को प्रकाशित कर सकते हैं। आप गाँव गाँव, घर-घर फिर कर युवानो एवं बालकों को श्रीजी महाराज के मूल गादी की पहचान करावें, इसके साथ उपासना के स्म को भी समझा सकते हैं। जीवन में सच्चा मार्ग संस्कार के विना संभव नहीं है। जैसे अनाज का आटा (पिसान) थोड़ा भी हवा का झोंका हो तो उड़जाता है। उसी आंटा को पानी से मिला दिया जाय और रोटी बनाकर घी लगाया जाय तो स्नेह युक्त हो जायेगा। ठीक इसी तरह जीव को स्नेह मिलता रहे तो वह दृढ हो जाता है। जीवन में सत्संग सभा एवं शिबिरों द्वारा सच्चा पाथेय मिलता रहे तो पुरानी कुटेव, खराब संगति दूर हो जायेगी और जीवन खिल उठेगा। जिस तरह पतझड़ के बाद वसंतऋतु आते ही नयी कोपलें आ जाती हैं। इसलिये हे युवानों। आपका जीवन अमनोल है। जो इस सत्संग में जुड़ते ही अन्दर प्रकाश प्रकाश फैल जायेगा। जीवन नवपल्लवित हो जायेगा। महक उठेगा। जीवन के विकास में अध्ययन का बहुत महत्व है। अध्ययन से मानव के विचारों पर तथा विचारों से वर्तन पर असर पड़ती है। वारंवार अश्लील वांचन करने से संस्कार विगड़ता है जिससे चरित्र शिथिल होने लगता है। इसलिये मन को दृढ करके ऐसे अश्लील साहित्य से दूर रहे तो अपना ही नहीं बल्कि आने वाली परम्परा (पीढ़ी) का श्रेय होगा। हंमेशा सात्विक तथा जीवन में उपयोगी संत एवं भक्तों के जीवन से सम्पृक्त साहित्य का वाचन रखेंगे तो खराब साहित्य अपने आप दूर होने लगेगा।

ऐसी कहावत है कि **"Show me your books, I will read your character."** वाचन की शक्ति अति बलवान बताई गई है। इसलिये युवान अपने जीवन में विकास के लिये उत्तम साहित्य का वाचन रखेंगे तो खराब साहित्य वाचन की आदत अपने आप दूर हो जायेगी।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १६

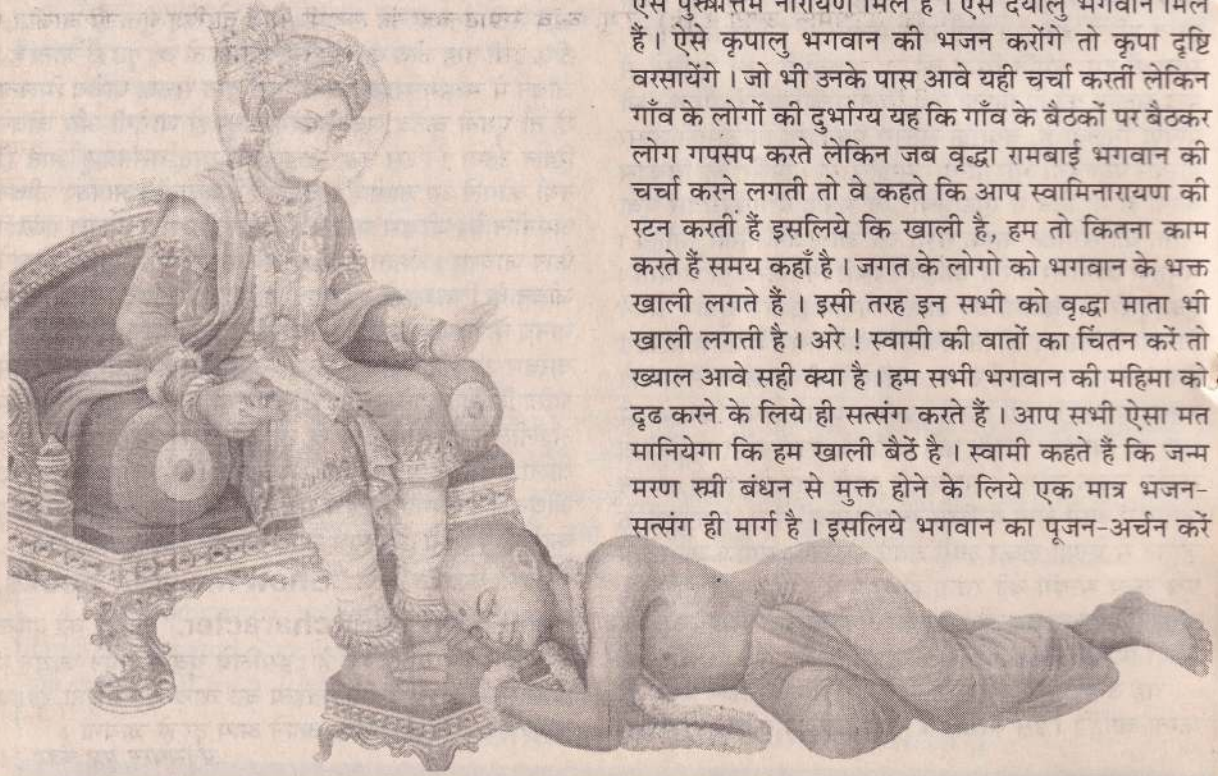
चरण सुख

- साधु धर्मकिशोरदास (प्रयागराज यु.पी.)

मांग मांग कर सब मांगते है, जगत के बैभवी सुख । लेकिन प्रभु मैं तो मांगता हूँ, आप के चरणों का सुख ॥

इस भवाटवी में भटकता मानव जब भगवान के पास जाता है तब जगत के वैभवी सुख ही मांगता है । हे भगवान हमें एक उत्तम बंगला देना, गाड़ी देना, उस पर बैठने की एक पत्नी देना, जिससे संसार का उत्तम व्यवहार चले इतनी संपत्ति देना । इतना ही नहीं जब भगवान के पास जायेगा तब कुछ न कुछ मांगता ही रहेगा । क्योंकि भगवान के आश्रय पर भरोसा नहीं है । इस लिये कि उसे भगवान की पहचान हुई नहीं है । लेकिन जो भगवान के यथार्थ भक्त हैं वे सम्पूर्ण न्यौछावर करके उन्हीं पर भरोसा रखते हैं । उन्हे ख्याल है कि जो जन्म दिया है वह पालन भी करेगा । वे भगवान को अपना माता-पिता माने है । जिस प्रकार छोटा बालक हो उसके कहे विना माता-पिता सम्पूर्ण इच्छा पूर्ण कर देते हैं । ऐसा ही भरोसा जो भगवान पर रखे तो भगवान अवश्य उसके सभी मनोरथ पूर्ण करेंगे । यथार्थ रूप से देखें तो जगत का सुख शास्वत नहीं है । वर्तमान सुख के पीछे दुःख छिपा हुआ है । जिस प्रकार कोई नई गाड़ी लेता है तो कितना आनंदित होता है जब वही कहीं टकरा जाय तो कितना दुःखी हो जाता है । जो व्यक्ति भगवान का आश्रय ले लिया है तो उसके जीवन में कभी दुःख आयेगा ही नहीं । क्योंकि यही सुख शाश्वत है । श्रीजी महाराज का चरित्र सुनने से शाश्वत सुख की अनुभूति होगी ।

तो भक्तों ! आप को कौन सुख चाहिये ? भगवान की महिमा का जितना गुण गान किया जाय उतना कम है । भगवान के समकालीन नंद संतो ने जिन कीर्तनो द्वारा महाराज की महिमा का गुणगान किया है वे कीर्तन आज भी संप्रदाय में गाये जाते हैं । (तमारी मूर्ति विना .....) जब भी महाराज के चरणों का गुणानुवाद किया जाता है तब कठलाल की बृद्धारामबाई का नाम लिया जाता है । उनका जीवन भक्ति मय था । भगवान के स्वरूप में उन्हें दृढ़ निष्ठा थी । भगवान के प्रति इतनी अधिक निष्ठा थी कि जो भी उनसे मिलता उससे भगवान की ही वात करतीं । भगवान की भजन करेंगे तो सुखी होंगे । अन्यथा इसी भवाटवी में भटकते रह जायेंगे । ऐसे पुरुषोत्तम नारायण मिलें है । ऐसे दयालु भगवान मिले हैं । ऐसे कृपालु भगवान की भजन करोंगे तो कृपा दृष्टि वरसायेंगे । जो भी उनके पास आवे यही चर्चा करतीं लेकिन गाँव के लोगों की दुर्भाग्य यह कि गाँव के बैठकों पर बैठकर लोग गपसप करते लेकिन जब वृद्धा रामबाई भगवान की चर्चा करने लगती तो वे कहते कि आप स्वामिनारायण की रटन करतीं हैं इसलिये कि खाली है, हम तो कितना काम करते हैं समय कहाँ है । जगत के लोगो को भगवान के भक्त खाली लगते हैं । इसी तरह इन सभी को वृद्धा माता भी खाली लगती है । अरे ! स्वामी की वातों का चिंतन करें तो ख्याल आवे सही क्या है । हम सभी भगवान की महिमा को दृढ करने के लिये ही सत्संग करते हैं । आप सभी ऐसा मत मानियेगा कि हम खाली बैठें है । स्वामी कहते हैं कि जन्म मरण रूपी बंधन से मुक्त होने के लिये एक मात्र भजन-सत्संग ही मार्ग है । इसलिये भगवान का पूजन-अर्चन करें



तो जन्म-मरण का फेरा खत्म हो जाय। इसीलिये बृद्धा माता कहती कि भगवान की भजन करो । लेकिन गाँव में सभी कुसंगी थे । वे भजन क्यों करेंगे । एक बार भगवान स्वामिनारायण एक गाँव से सत्संग कराकर दूसरे गाँव जा रहे थे, गाँव के बाहर कुछ महिलाये मस्तक पर पानी का घड़ा भरकर जा रही थी वे सब भगवान को देखकर वृद्धा माता से जाकर कहीं कि तुम रात-दिन स्वामिनारायण - स्वामिनारायण करती रहती हो, स्वामिनारायण तो गांव के बाहर से ही चले गये तुम्हारे यहाँ नहीं आये। यह सुनते ही वृद्धा अपने मस्तक पर नया घड़ा पानी भरकर महाराज के पीछे दौड़ी और गाँव के बाहर जिधर महाराज जा रहे थे जोर से आवाज दी प्यारे स्वामिनारायण ! इस प्रेमालु शब्द को भगुजी तथा मूलजी ब्रह्मचारी सुने और महाप्रभु से कहे कि महाराज ! आप को कोई महिला पुकार रही है। जब महाराज पीछे मुड़कर देखे तो ख्याल आया कि ओहो... यह तो हमारी रामबाई है। वृद्धामाता मस्तक पर पानी भरा घड़ा लेकर हमारी तरफ दौड़ती आ रही है । हांफने के कारण कुछ कहना स्पष्ट नहीं हो रहा था । इसलिये महाराजने कहा वृद्धामां मस्तक से घड़ा उतारकर बात करो । रामबाई मस्तक से घड़ा उतारकर महाराज से कहने लगी कि हे महाराज ! आप अपना चरण इस घड़े में बोर दीजिये। महाराज ने कहा क्यों ? आपके चरणारविंद का चरणामृत चाहिये । महाराजने कहा एक लोटा जितना - चरणामृत बहुत हो गया। वृद्धा माताने कहा पहले आप पग बोरिये बाद में बताऊँ। महाराज पहले दक्षिण चरण बाद में बामपाद घड़े में डाले, इसके बाद रामबाई कहने लगी कि प्रभु आप सब कुछ जानते हैं।

तन की जाने मन की जाने, जाने चितकी चोरी।
उसके आगे क्या छिपाओं, जिसके हाथ में जीवन की डोरी।

प्रभु ! आपके सामने क्या छिपाना, यहाँ सभी कुसंगी ही रहते हैं। सम्पूर्ण दिन व्यर्थ में बिगाड़ देते हैं। भगवान श्री स्वामिनारायण शिक्षापत्री में आज्ञा किये हैं कि "व्यर्थ कालो न ने तव्यो भक्ति भगवतो विना" (१७३) भगवान की नव प्रकार की भक्ति के विना व्यर्थ काल नहीं विताना चाहिये।

सभी को कहके थक गई हूँ, कोई मानता नहीं है। लेकिन महाराज ! आपकी कृपा से सुंदर विचार आया कि आपका चरणामृत लेकर गाँव के कूएँ में डालूंगी जिससे सभी के विचारों में कुछ परिवर्तन आजाये । सद्बुद्धि बने जिससे सत्संग करके सुखिया हों। बस इतनी आपकी कृपा हो ऐसी आपके चरणों में प्रार्थना। उस समय प्रभुने भगुजी एवं मूलजी ब्रह्मचारी से कहा कि देखे हमारे प्रति कैसी निष्ठा एवं चरण की महिमा। इसीलिये तो हम ऐसे भक्तों की सदा याद करते रहते हैं।

भक्तों ! हमें कौन मिला है, इसका हमें अभी भी ख्याल नहीं है। "एवा मल्या छे महाराज जे सर्वना श्याम छे" जब हम संत-भक्तों के चरित्र को वांचे तो ही हमें ख्याल आयेगा कि प्रभु के स्वरूप की महिमा क्या है। जगत के लोग जब भगवान के पास जाते हैं तो बहुत कुछ मांगते हैं। लेकिन महाराज के जो निष्ठावाले हैं वे जगत के तुच्छ पदार्थों को नहीं मांगते हैं। वे केवल "चरण पास बन, चरण पूजा करुं" मांगते हैं, पर उन्हें यह ख्याल नहीं कि चरण कितना महंगा है। जब हम महाराज के चरित्र को सुनते है तभी ख्याल आयेगा कि चरण का क्या महत्व है।

एकबार महानुभावानंद स्वामी गाँव घूमकर आये थे वे लम्बे समय के बाद जब महाराज के दर्शन करने गये, उस समय महाराज अक्षर कक्ष में आराम करने की तैयारी कर रहे थे। उस समय महानुभावानंद स्वामी महाराज के पास जाकर धीरे-धीरे चरण दबाने लगे। उस समय महाराज अपने चरण पीछे खींच लिये। यह देखकर स्वामी जोर जोर से रोने लगे। रोते हुए कहने लगे कि महाराज क्यों पैर खींच लिये ? हम आपके लिये घरबार छोड़कर आये है। संसार छोड़कर आये है। महाराज ने कहा आप तो हमें प्राप्त करने के लिये घर-बार छोड़े है। लेकिन आप विराट नारायण के सामने देखो तो ख्याल आयेगा कि जो विराट नारायण ५०-५० हजार वर्ष तक तप किये तो भी हमारी झांकी भी नहीं देख पाये। वहीं आपको बड़ी सरलता से मिल गया है। इसलिये ख्याल नहीं आ रहा कि चरण कितना महंगा है। स्वामी यह सुनकर रोने लगे। महाराज दया करके चरण फैला दिये स्वामी उस चरण का सुख लिये। तो भक्तों ! आपने देखा। यह तो हमें बड़ी सरलता से मिल गया है, इसलिए महिमा नहीं है। महाराज ने हमारे ऊपर दया करके स्वयं की पहचान करा दी है। जिस से हम उन्हें पहचान सकें है। भगवान ने यह वचन दिया हैं कि हम अपने भक्तों की इच्छा को हमारे स्थान पर विराजमान आचार्य में रहकर पूरा करेंगे। आचार्य हमारे स्वरूप है। इनकी पूजा करना। इनका सम्मान करना। इन्हीं की आज्ञा में रहना। इनके चरण स्पर्श करने का पुण्य फल मिलेगा। इसलिए हे भक्तों ! ऐसा महंगा चरण हमें मिला है तो पहचान करके रखना, जब भी दर्शन करने जाना तब इतना ही मांगना मात्र चरण सुख मांगू मैं महाराज।

चरण सुख मागूं मैं महाराज,
दीन दयाल दया कर देना।
हमें तुम्हारा शरणागत बनाना,
रात दिवस नित्य चरण सुख मांगू .... चरण सुख...
चरण सुख देना श्री महाराज ..... चरण सुख .....

वचनामृत-डभोयाणी

साधु घनश्यामप्रकाशदासजी जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

एक समय महाराज सभा के बीच में कहे कि, इन दादा खाचर के दास बनो ? बड़े बड़े चमर डुलने वालों का चमर ढीला पड़ गया सम्पूर्ण सभा जन नीचे गर्दन करके जमीन पर देखने लगी । उसमें से कुछ ने कहा हमारे घर भी घोड़े पूंछ हिलाने वाले हैं । हम आपके दास बन सकते हैं लेकिन दादा जैसे काठी के दास क्यों बने ? इतने में पीछे से पर्वतभाई ने आवाज दी कि "जन्म-जन्मान्तर से स्त्री एवं बालकों के हम गुलाम तो हैं ही अब आपके भक्त का गुलाम होने की भाग्य कहां है ? महाराज की प्रसन्नता का ख्याल आ गया । एकबार महाप्रभु सभाजनों से पूछा कि जो हमारे सेवक हों वे मेरे पास आकर बैठे, जो सत्संगी के सेवक हो वे दूर जाकर बैठे । जो महाराज को चाहने वाले थे वे उनके पास आकर बैठे । जो सत्संग के सेवक थे वे दूर जाकर बैठे । अब तो हम भक्त के भक्त की भक्ति करता हूँ । (ग.म. २८)

एक प्रसंग में राजा भाई साधु होने आये । उस समय महाराजने पूछा "आप को अपने मन का करना है या मेरे मन का ?" तब राजाभाई ने कहा "हमें तो आपको प्रसन्न करना है" । तो साधु न बनकर पर्वतभाई का हल जोते । यह सुनकर राजाभाई तीन वर्ष तक पर्वतभाई की सेवा चाकरी किये । जिससे महाराज अत्यंत प्रसन्न होकर दीक्षा देकर उसी समय वड़ताल मंदिर का महंत बना दिये थे ।

"दासना दास थईने जे रहेशे सत्संगमां ।
भक्ति तेनी भली मानीश, राचीश तेना रंगमां ॥"

इसके अलांवा कीर्तन में गाया जाता है कि -

"श्रीजी अने सौ संतो रे, मली करजो मारी सहाय"

लोज-१४ वें में भी महाराज इस वात को अनुमोदित करके कहते हैं कि जब भगवान का दर्शन नहीं होता तब अतिशय कष्ट होता है । ग.म. ४८ में कहते हैं कि संतो की बीच रहने की वासना है । लेकिन अब जन्म लेने की कोई निमित्त नहीं है । फिर भी संतो के बीच जन्म लेने की ईच्छा है । इस प्रकार के इतिहास का चिंतन करने से मन वचन कर्म द्वारा भगवान की प्राप्ति हो यही भावना होनी चाहिए । दास भाव से संत भक्तों के संबन्ध से भगवान में अनहद प्रेम बढता जाय ऐसा होना चाहिए । मुक्तानदं स्वामी भी इस वात पर सुरपूरे हैं ।

"हुं टले हरि ढूंकडा ते टला दासे रे ।
बाप का बाप होकर कोठारी बनता है अथवा भंडारी ॥"

का पद मिलता है, अथवा मंत्री का पद प्राप्त हो सकता है लेकिन हरि दूर हो जायेंगे उनका मिलना असंभव हो जायेगा । संत-भक्तों को दुःख देने से प्रभु कई योजन दूर हो जाते हैं, यह सत्संग में प्रायः देखा गया है । शिष्यों के प्रति संबन्ध कीभावना भी सद्गुरुओं का आदर्श ही कहा जायेगा । श्रीहरि संबोधित करके कहते हैं कि - "अने श्रीकृष्ण भगवाने वृंदावनने विशे, वृक्ष ले तथा पक्षी ने तथा मगृला ने बल देवजी आगण अति मोटा भाग्यवान कह्या छे । भगवान श्रीकृष्म से ऐसा वर मांगा कि हे प्रभु ! इस जन्म में पशु-पक्षी के स्म में भी हम आपका दास बनकर रहें, आपके चरणरज की सेवा मिलती रहे । ऐसी मेरी भाग्य हो । अपने मंदिर के चौगान में जो भी वृक्ष हैं वे कितने भाग्यशाली है, जिनके ऊपर पूज्य महाराजश्री तथा संतो की चरण रज उड़कर गिरती है । जो निष्ठापूर्वक भजन भक्ति करते हैं ऐसे साधु-पार्षद-भक्त-स्त्री-पुस्म-बाल-युवान सभी अपने मन में किसी के प्रति अवगुण न आने दे । किसी के प्रति कपट भाव नहीं रखना चाहिये । पवित्र भाव में ही परमात्मा का प्रतिबिम्ब पड़ता है । शिव-ब्रह्मा शुक मनकादिक, देव-गन्धर्व, मुक्त भी भक्तों के संग की चाहना किये हैं । वह सब विना मांगे हम सभी को परमात्मा ने दे दिया है । फिर भी परमात्मा के प्रति हमारी निष्ठा विचारणीय है । यदि ऐसा नहीं तो निश्चित वापस आना पड़ेगा । मात्र मंदिर की प्रथम सीढी पर चढने से कार्य पूर्ण होजायेगा ऐसा नहीं है । निष्कपट भाव से व्यवहार करना, संत-भक्तों में आत्मभाव रखना, अपने इष्टदेव में एक निष्ठा भक्ति रखना ही आत्मकल्याण का मार्ग है ।

तुलसी जाके मुख न से भूले निकसे राम ।
ताके पगकी पहेनीया, मेरे तन की चाम ॥

इस पंक्ति में बोलने की या सुनने की वात नहीं है अपितु जीवन के हर व्यवहार में उपयोगी है । महाराज कहते हैं कि - जब भगवान के भक्त की महिमा समझ में आजाय तब भगवान के भक्त का अवगुण दिखाई नहीं देगा । अपने इष्टदेव के प्रति भी महिमा को समझकर उसमें कमी नहीं आने देना चाहिये, बल्कि उत्तरोत्तर निष्ठा बढती जाय ऐसा करना चाहिए । गढड़ा दादा के दरबार में चोरी करते हुए चोर पकड़े जाने पर चोर को दंड नहीं दिया गया तो महाराज ने दादा से इसका कारण पूछा । दादा ने कहा कि उसे दंड नहीं दिया जा सकता । आपस की बात होतो उसे आपस में समझ लेना चाहिए । महाराज ! यह सुनकर महाराज ने कहा कि इस तरह राज्य कार्य नहीं चलता । राज्य की व्यवस्था संतुलित रखने के लिये समभाव का न्याय

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १८

संप्रदाय के ऐसे हरिभक्तों से ही श्री स्वामिनारायण म्युझियम परिपूर्ण होगा

विश्व में किसी संप्रदाय के पास अपने इष्टदेव की उपयोग की हुई वस्तु संग्रहालय के स्म में या अन्य रखरखाव के स्म में उपलब्ध नहीं है। इसका उदाहरण मात्र श्री स्वमिनारायण संप्रदाय ही है। यद्यपि ऐसा संकल्प करना यह साधारण वात नहीं है। यह तो सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के पुत्र एवं नरनारायणदेव पीठ के छठवें निवृत्त प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सतत् ३५-३५ वर्ष तक (गद्दी पर विराजमान थे उस समय) गाँव-गाँव फिरकर, शहर, देश-विदेश में विचरण करके लाखों करोड़ो आश्रितों को दर्शन एवं आशीर्वाद देकर कृतार्थ किया, इसके साथ अनेक महामंदिर, हरिमंदिर तथा समाजलक्षी सेवाओं का अनहद जिसकी कल्पना न की जा सके ऐसा सुख देकर किसी को खबर भी नहीं पड़ी और निवृत्ति ले लिया। निवृत्ति में प्रवृत्ति इस उक्ति को चरितार्थ करने के लिये श्री स्वामिनारायण म्युझियम के भव्य निर्माण का संकल्प प्रकाशित करके लाखों करोड़ो को आश्चर्य युक्त कर दिये। संत हरिभक्त इस संकल्प को सांगोपांग स्वीकार कर लिया। आज नारायण पुरा विस्तार ही नहीं अपितु समग्र अहमदाबाद शहर तथा गुजरात का समग्र गाँव इसके साथ देश-विदेश के हरिभक्तों के लिये छोटासा नारायणपुरा विस्तार श्री स्वामिनारायण म्युझियम के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। श्री स्वामिनारायण म्युझियम का खात पूजन प.पू. लालजी महाराज के शुभ हाथों से जब से हुआ तब से आज तक देश विदेश के हरिभक्तों द्वारा आर्थिक अनुदान की धारा बहती जा रही है। जब कि अपने संत तथा हरिभक्त गुस्मरम्परा के प्रसादी की वस्तु प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण करने का दृढ निश्चय किये। कितने युवान संत तो गुरुपरम्परा की जो भी वस्तु उनके पास थी विना लोभ-लालच के प.पू. महाराजश्री को भेंट कर दिये। ऐसे संत धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम जितनी जल्द पूर्ण हो ऐसी भावना छोटे से बड़े सभी हरिभक्तों में है। वर्तमान में ही मोटप (जि. महेसाणा) गाँव में उत्पन्न सूरत में रहनेवाले श्री नरनारायणदेव गद्दी के अनन्य निष्ठावाले तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीके कृपापात्र श्री नंदुभाई के. पटेल की पुत्री के विवाह प्रसंग पर ता. २४-१२-०७ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद देने हेतु महेसाणा पधारे थे।

श्री नंदुभाईने विवाह में जो भी धनराशी मिली थी वह सभी "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" निर्माण में दान कर दिया। उसे स्वीकार करने के लिये प.पू. बड़े महाराजश्रीको आने के लिये विशेष आग्रह किया। इस प्रसंग पर हजारों हरिभक्तों के बीच में यह धन राशी देने के लिये सूचना की उस समय सभी आश्चर्य युक्त हो गये। सम्प्रदाय में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है। यह किसी को दिखाने के लिये नहीं है। लेकिन साक्षात् श्रीजी महाराज के पुत्र ऐसे बड़े महाराजश्री की मात्र प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये किये थे। श्री नंदूभाईने अपनी बेटी के विवाह प्रसंग पर प्राप्त धन राशी को जब महाराजश्री को अर्पण किया तो महाराजश्रीने मना कर दिया। लेकिन विशेष आग्रह पर स्वीकार करना पड़ा।

नंदूभाई ने बड़े महाराजश्री के चरणों में प्रार्थना करते हुए कहा कि आप का संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम है। तो



हमारा सभी परिवार यह चाहता है कि जो विवाह में धन प्राप्त है वह म्युझियम के काम लगे ऐसा संकल्प है। ऐसे हरिभक्तो को धन्यवाद।

दूसरा एक उदाहरण और है - मूल पिलाबई (ता. विजापुर) गाँव की श्री उषाबहन दशरथभाई भावसार जो श्री नरनारायणदेव के अनन्य आश्रित हैं जो बाड़ज में रहते हैं। उनके पति मील में नौकरी करते थे। उसी समय उन्हें टी.बी. की बिमारी हो गयी। परिवार में तीन बेटी तथा एक बेटा है। अनेक प्रतिकूल संयोग में भी श्री नरनारायणदेव की निष्ठा में कमी नहीं आई। अटूट श्रद्धा एवं भक्ति के बल से रात दिन सिलाई का काम करके बेंटो की शादी-विवाह कर दी कुछ दिन के बाद पति की भी तबियत सुधरने लगी। बाद में नौकरी भी चालू हो गयी। लेकिन उसे सत्संग के प्रति प्रेम नहीं था। पत्नी में श्रद्धा अटूट थी। प्रतिदिन श्रद्धा बढती रही। इसी बीच म्युझियम का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। यह बात बहन की जानकारी में आई उसी समय से उसने मन में संकल्प कर लिया कि हम भी इस में यथा शक्ति दान करेंगी। परिणाम स्वस्थ रात-दिन सिलाई का काम करके लाखों-करोड़ो रुपये की अपेक्षा उस बहन ने २१११/- रुपये म्युझियम के लिये दान करके अपने जीवन की कीमत को चरितार्थ किया। सही पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त धन को दान करना ही यथार्थ है, अन्य तो मिथ्या है।

अरे! सादरा (ता. जि. गांधीनगर) गाँव की निवृत्त शिक्षिका बहन ने तो मन से संकल्प कर लिया कि हमारी ग्रेज्युटी, पी.एफ., फिक्स सभी श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये अर्पित है। जिस में से कुछ रकम श्री स्वामिनारायण म्युझियम में जमा भी करा दी है। यह हमारे इष्टदेव का काम है। हम बड़े महाराजश्री के ऋणी है। ऋण से मुक्त होने का यही सच्चा उपाय है अन्यथा ऋण से मुक्ति विना मोक्ष या कल्याण सम्भव नहीं है। प.पू. बड़े महाराजश्री म्युझियम में कभी किसी से दान देने की बात नहीं करते। तो क्या हम हरिभक्तों का कर्तव्य नहीं है कि म्युझियम के लिये स्वयं समर्पित की भावना करके भव्य निर्माण हो इसलिये यथा शक्ति दान करके मोक्ष एवं कल्याण के सहभागी बने।

कितने ऐसे हरिभक्त भी है जो अन्यत्र दान कर देते है बाद में उन्हें ख्याल आता है तो बहुत पछताते हैं। जब कि यह स्वयं परम कृपालु श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुओं का अलौकिक दिव्य संस्थानक बनेगा, जो श्री नरनारायणदेव की मालकी का होगा, ऐसे श्री स्वामिनारायण म्युझियम में किया गया दान आत्मकल्याणार्थ होगा इतना ही नहीं सर्वावतारी श्रीजी महाराज प्रसन्न होंगे जिससे इह लौकिक पारलौकिक सुख की प्राप्ति होगी।

कितने तो ऐसे महाराष्ट्रियन या अन्यत्र राज्य के हैं जिन्हे सम्प्रदाय के विषय में थोड़ा ज्ञान नहीं है फिर भी धार्मिक भावना से प्रेरित होकर श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण कार्य में दान दे रहे हैं। यथार्थ रूप से जो चाहना है वैसा ही निर्माण होगा, जिस प्रकार यह अविरत दान की गंगा बह रही है। समय से पहले पूर्ण होगा ऐसी ईश्वरीय प्रेरणा मिल रही है।

प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभा में श्री दीपकभाई के शुभ स्वास्थ्य के लिये आशीर्वाद दिया सभी रिपोर्ट नोर्मल हो गया

सर्वावतारी श्रीजी महाराज के समय में अद्‌भुत चमत्कार देखा गया था। कंडाल गाँव के भक्तराज कला भक्त के वंशज श्री नगीनभाई रामाभाई पटेल के युवान पुत्र दीपकभाई को असाध्य रोग हो गया। अहमदाबाद शहर के नामांकित डॉक्टर ने खूब प्रयास किया। जिससे २३-३-०७ को रीपोर्ट में यकृत का कैन्सर निकला। जिसका आपरेशन संभव नहीं था। सम्पूर्ण परिवार के ऊपर वज्रपात जैसे हो गया। यह समाचार परिवार के लिये असह्य था। लेकिन इष्टदेव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री में पूर्ण निष्ठा थी। इसलिये परमात्मा ने रास्ता बताया। अंत में जिनकी लाखों आश्रितों पर दया वरसती रहती है ऐसे कृपासागर पूज्य बड़े आचार्य महाराज के दर्शन करने गये वहाँ अपनी सम्पूर्ण स्थिती को कह सुनाये। थोड़ी देर के लिये पू. महाराजश्री भी मानने को तैयार नहीं थे। महाराजश्री सम्पूर्ण रिपोर्ट देखकर कहे कि श्री नरनारायणदेव पर श्रद्धा रखियेगा, वे सब ठीक कर देंगे। इसके साथ यह भी कहे कि प.पू. आचार्य महाराजश्री की पूजा में परंपारगत श्री नीलकंठ वर्णी द्वारा पूजित "शालीग्राम" भगवान की प्रतिदिन षोऽशोपचार से पूजा होती है, उस अभिषिक्त जल का आप प्रतिदिन पान करें। चैत्र कृष्ण-३ ता. ५-४-०७ को अपने जन्म दिन के प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर की सभा में लाखों संत हरिभक्तों ने जो शुभेच्छा व्यक्त की थी उसे पू. महाराजश्रीने दीपकभाई के दीर्धायु एवं स्वास्थ्य लाभ के लिये अर्पण कर दी थी। हजारों-लाखो की भरी सभा में एक युवान हरिभक्त को इस तरह का आशीर्वाद केवल भगवान ही दे सकते हैं। अथवा उन्हीं के अंश पुत्र धर्मवंशी आचार्यश्री ही कह सकते हैं। अन्य का कहा हुआ मिथ्या हो सकता है। अंत में दीपकभई की सम्पूर्ण रीपोर्ट नोर्मल निकली। आज भी वे स्वस्थ हैं। उनका समस्त परिवार प.पू. बड़े महाराजश्री के ऐसे अलौकिक आशीर्वाद एवं कृपा से जन्मजन्मान्तर तक ऋणी बन गये है।

(दीपकभाई द्वारा लिखे गये पत्र का अंश)



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीना दिव्य विदेश प्रवास

- साधु धर्मकिशोरदास (प्रयागराज यु.पी.)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री से अहमदाबाद दि. ४-१२-२००७ को दोपहर को ३-०० बजे जेट एरवेज से मुम्बई जाने को रवाना हुए तथा डेढ घंटे में मुंबई के छत्रपति शिवाजी आंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे। वहाँ पहुंचे तब हरिभक्तोने जोरशोर से फूलहार से स्वागत किया तथा चरणस्पर्श, दर्शन कर पू. महाराजश्री को प्रणाम किये। हरिभक्तों में अपूर्वभाई धोळकिया तथा मूल राजस्थान के वाली गांव के मेळा परिवार के सदस्य उपस्थित रहे थे। मेळा परिवार पर कृपा दृष्टि कर पू. महाराजश्रीने उनके घर पदार्पण करने के लिए प्रस्थान किया फिर बम्बई के पोश विस्तार में पू. महाराजश्री पहुंचे तो मेळा परिवारने बेन्डबाजा के साथ भव्यादि भव्य स्वागत किया तथा घर में महाराजश्री के चरण की पूजा की तथा महाराजश्री का पूजन किया। पश्चात संतोने सत्संग की बाते की और पू. महाराजश्रीने आशीर्वचन दिए। पश्चात महाराजश्री अपूर्वभाई के घर पधारे। वहीं संध्या भोजन लेने के बाद लंडन के लिए प्रस्थान किये।

दि. ५-१२-२००७ को रात में ब्रिटिश एरवेज की फ्लाईट नं. ०१९३ से लंडन के लिए प्रस्थान किया। आठ घंटे के सफर के पश्चात सुबह ७-२५ को हिथ्रो एरपोर्ट पहुंचे थे। वहाँ स्नान पूजा के पश्चात ब्रिटिश एरवेज फ्लाईट नं. ०९३ लंडन से केनेडा के टोरन्टो सीटी में जाने के लिए प्रस्थान किया। दि. ५-१२-२००७ की शाम को केनेडा पहुंचे। विदेश की धरती पर हरिभक्तोने फूलहार तथा गुलदस्ते से श्री नरनारायणदेव के जयघोष के साथ स्वागत किया। वहाँ से ब्रामटन विस्तार के प.भ. शशीकांतभाई के घर पू. महाराजश्रीने उतारा किया। पश्चात स्नान विधि कर शालीग्राम भगवान को भोग लगाया पश्चात हरिभक्त संतोने मिलकर एकादशी का जागरण किया। सभा में पू. महाराजश्रीने अमृतवाणी का लाभ दिया पश्चात हरिभक्त अपने निवास स्थान जाने के लिए निकले तब पू. महाराजश्री प्रभु का ध्यान कर आराम करने गये।

दि. ६-१२-२००७ को पू. महाराजश्री प्रातः स्नान विधि के बाद पूजा करके भगवान शालीग्राम का अभिषिक्तजल सभी हरिभक्तों में वितरण किया। दोपहर का भोजन करने के बाद थोड़ा आराम करके करीब तीन बजे से हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करने हेतु प्रस्थान किये। ब्राह्मटन से दो घन्टे की दूरी तय करके किचनर शहर में भक्तों के घरों में पदार्पण करके, ठाकुरजीकी आरती उतारकर, संतो की कथा में भाग लेकर भगवान के जयघोष के साथ वहाँ से प्रस्थान किये। वहाँ से २० मिनट की दूरी पर गल्फ सीटी में पहुंचे। श्री पंकजभाई के यहाँ ठाकुरजी की आरती उतारकर विराजमान हुए तो भक्तों ने समूह में पू. महाराजश्री की आरती उतारी। बाद में महाराजश्री के साथ न्युजर्सी आये हुए शा. माधवप्रसाददासजी तथा अन्य संतो ने ठाकुरजीकी रसोई तैयार की। भगवान को भोग लगाकर महाराजश्री प्रसाद ग्रहण किये। संतो ने पंकजभाई के यहाँ महाराजश्री के प्रति निष्ठा बढे ऐसी सुंदर कथा की। बाद में सभी भक्तों ने महाराजश्री की भाव भीनी विदाई की और पू. महाराजश्री वहाँ से अपने निवास स्थान पर आये।

दि. ७-१२-२००७ के प्रातः काल हरि स्मरण के साथ दैनिक कृत्य करके भक्तों से मिले और वहाँ से भक्तों के घर पदार्पण करने के लिये निकले। उस समय बाहर का वातावरण वर्फीला होते हुए भी, आकाश से हिम गिर रहा था तो भी महाराजश्री भक्तों को प्रसन्न रखने के लिए विचार किये बिना पदार्पण के लिए प्रस्थान कर दिये। साथ में हरिभक्तो की सात-आठ गाडियाँ भी थीं। जिस में बोस्टन से पधारे हुए अरविंदभाई, रमणभाई, संजयभाई, दशरथभाई तथा शिकागो से विवेक ब्रह्मभट्ट, हेमलभाई पधारे थे। साथ में स्थानिक

हरिभक्त भी थे । इतनी अधिक गाड़ियों को देखकर वहाँ के लोगों को होता था कि ये कोई दिव्य पुरुष हैं ।

भक्तों ! जब महाराजश्री भगवान के ऊपर स्वस्थ हैं तो दिव्य पुरुष लगेंगे ही । भ्रमण करते हुए इटाशिको में पहुँचे वहाँ विपुलभाई सोनी, रसिकभाई, प्रज्ञेशभाई भावसार के यहाँ पदार्पण करके नोर्थयोर्ड विस्तार में हरिप्रसाद भट्ट के यहाँ पदार्पण किये । वहाँ से मार्कम जैसे उत्तम विस्तार में हिमांशुभाई, निरंजनभाई, निलेशभाई इत्यादि के यहाँ पदार्पण किये सभी ने महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी । पश्चात् अपने निवास स्थान पर आकर प्रसाद ग्रहण करके आराम किये ।

दि. ८-१२-२००७ को पू. महाराजश्री प्रातः दैनिक कृत्य करके श्री स्वामिनारायण मंदिर में महापूजा के कार्यक्रम में पधारे जिस विधि को शा. धर्मकिशोरदासने करवाया । सभी भक्तजन इस विधि का तथा पू. महाराजश्री के दर्शन का लाभ लिये । बाद में पू. महाराजश्री स्व स्थान पर जाकर भोजन करके आराम किये । वहाँ संतो ने महाराज के प्रति निष्ठा की उत्तम बात की । बाद में पू. महाराजश्रीने सुंदर आशीर्वचन दिया । सभी भक्त जीवन को धन्य माना । महाराजश्री सायंकालीन संध्या आरती करके अपने निवास स्थान पर गये । सायंकाल का प्रसाद ग्रहण करके भक्तों के साथ कुछ चर्चा विचारणा करके अपने शयन कक्ष में जाकर शयन किये ।

दि. ९-१२-२००७ की शाम को **Dalas** पहुँचे वहाँ श्री अस्गभाई के यहाँ निवास की व्यवस्था की गयी थी । सायंकाल डलास के मंदिर में सभा का आयोजिन किया था । जिस में श्रीजी महाराज तथा धर्मकुल की महिमा समझायी गई थी । बाद में पू. महाराजश्री सभी को नीति-नियम तथा दोनो देश की गादी के प्रति वफादार रहते देखकर खूब प्रसन्न हुए । यहाँ के सत्संग में खूब विकास हो, सभी मिलकर भजन भक्ति करे ऐसा हार्दिक आशीर्वाद दिये । यहाँ के बहुत सारे भक्तों के यहाँ पदार्पण भी किये ।

दि. १०-१२-२००७ को प्रातः काल **Murphy** पहुंचे । वहाँ से **Richardson** तथा **Murphy** में अतुल पटेल, कौशिक अमीन, **Mckinney** में योगेश जोशी, अमित जोशी, **Plano** में राजेश पटेल, **Carrollton** में एल. जे. पटेल, श्याम पटेल तथा **Coppell** में दिव्येश पटेल के वहाँ पधरामणी करके उन्हें दिव्य लाभ देकर प्रसन्न कर दिया ।

शाम को **Coppell** से जयेश पटेल के वहाँ तथा वहाँ से **Lewissville** में अजय खेलड़ीया, वहाँ से **Irving** में भरत पटेल, विनु अधेरा, अमीन तथा **Grande Prairie** में दिपक पटेल के वहाँ **Arlington** में निशांत ठक्कर तथा निलेश शाह के वहाँ पधरामणी की ।

दि. ११-१२-२००७ के दिन **Coppell** में दिव्येश पटेल के घर पधरामणी की वहाँ से **Dention** प्रविण पटेल, मयुर मीराणी, **Flower Mound** केतन पटेल तथा **Lewissville** गोपेश पटेल, विपुल पटेल तथा दिव्येश पटेल के यहाँ **Coppell** पधारे थे । **Grande Prairie** में दिपेन सोनी **Irving** में सुभाष सोनी, अजय सोनी के घर पधारे थे । शाम को अजय सोनी के यहाँ से धीरेन सोनी, विपुल पटेल के यहाँ फिर से **Lewissville** में पधारे थे । वहाँ से जाकर दिनेश पटेल के यहाँ रात्रि निवास किया था । तथा वहाँ के हरिभक्तों के मनः संकल्प को पूरा करके हरिस्मरण करते हुए रात्रि शयन किये ।

दि. १२-१२-२००७ को ग्लास से सभी भक्तों को दर्शन का लाभ देकर प्रातः एल.ए. जाने के लिए प्रस्थान किये । ५ घन्टे की दूरी तय करके महाराजश्री (एल.ए.) एरपोर्ट पर पहुंचे । वहाँ के चेरमेन नटुभाई तथा ईश्वरभाई आदि भक्तों ने भव्य स्वागत किया । वहाँ से हरिभक्तों के साथ पयोनियर श्री स्वामिनारायण मंदिर आये । वहाँ घनश्याम महाराज, राधाकृष्णदेव का दर्शन करके पू. महाराजश्री निवास पर गये, इसी तरह मंदिर में संध्या आरती करके रात्रि शयन किये ।

दि. १३-१२-२००७ के दिन चार-पांच हरिभक्तों के घर पदार्पण करके मंदिर में भोजन किये । दोपहर २-३० बजे मंदिर से लोंसवेगास में नटुभाई अंबालाल डांगरवावाले के यहाँ पदार्पण किये । इसके बाद चार-पांच स्टोर में भी पदार्पण किये । यहाँ से प्रस्थान करके वड़ताल गद्दी के मंदिर में पधारे, वहाँ संध्या आरती करके सभी को आशीर्वचन का लाभ दिये । बाद में अपने मंदिर भोजन किये एवं शयन किये ।

दि. १४-१२-२००७ के दिन प्रातः दैनिक कृत्य करके घनश्याम महाराज, राधाकृष्णदेव के सानिध्य में सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की दिव्य महापूजा का आयोजन किया गया । समूह महापूजा में ७०-८० हरिभक्तों ने लाभ लिया । महापूजा शा. धर्मकिशोरदासने करवाया । प.पू. महाराजश्रीने प्रारम्भ करके पूर्णाहुति एवं आरती की थी । बाद में दोपहर के समय भोजन ग्रहण करके सायंकाल तीन-चार हरिभक्तों के घर पदार्पण किये । मंदिर द्वारा भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया था । सत्संगिभूषण कथा का आयोजन किया गया था जिसमें वक्ता ने अच्छी कथा की, बाद में पू. महाराजश्री भोजन करके शयन करने पधारे । सबसे आनंद का विषय यह है कि यहाँ पर दूर-दूर से हरिभक्त पधारे थे । जिसमें ह्युस्टन से मनजीभाई, न्युजर्सी से पंकजभाई, एडीसन से युवकमंडल, लंडन से भाविन पाठक, बोस्टन से युवक मंडल पधारे थे ।

दि. १५-१२-२००७ के दिन पू. महाराजश्री प्रातः विधि करके ९ से १२ तक कथा में सभी को दर्शन का लाभ दिये । संतो का प्रवचन एवं भक्तों द्वारा पूजन का लाभ दिये ।

दि. १६-१२-२००७ के दिन मंगलकारी सूर्य का मानो उदय हुआ हो क्योंकि एल.ए. मंदिर के ७ वे पाटोत्सव का दिन था । जिसमें पू. महाराजश्री की आज्ञा से युवान संत शा.

धर्मकिशोरदास स्वामी ने वैदिक विधि से घनश्याम महाराज एवं राधाकृष्णदेव का अभिषेक किया । अभिषेक के समय की झांकी का दर्शन सभी को हुआ । इसी मदंर में पूज्य पड़े महाराजश्री ने घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा कर रहे थे उस समय घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा कर रहे थे उस समय घनश्याम महाराजने महाराजश्री का दुपट्टा पकड़ लिया था । और यह निर्देश दिया था कि ये ही हमारे अपर स्वस्म है । इनसे प्रतिष्ठित स्वस्म में हमारा सदा निवास रहता है । वैसा ही दृश्य पू. महाराजश्री जब अभिषेक कर रहे थे तब दृष्ट हुआ । बाद में सभा का आयोजन किया गया था जिसमें धर्मकिशोर स्वामीने हिन्दी में प्रवचन किया ।

पू. महाराजश्री ने अपनी अमृतवाणी में कहा कि जिसे सत्संग में तथा प्रभु में प्रीति हो उसमें उत्तम गुणों का सिंचन हो रहा है। वे प्रतिदिन प्रगति के मार्ग पर बढ रहे हैं । जिसे भगवान में प्रीति है उनका कल्याण निश्चित है । आप सभी प्रतिदिन मंदिर में आकर सत्संग करते रहियेगा । इस तरह अमृतमयी वाणी का लाभ देकर एल.ए. एरपोर्ट से ३-४० की फ्लाईट में सानहोज पहुंचे । सायंकाल ५-३० बजे पी.एम. सानफ्रांसिको के एरपोर्ट पर पहुंचे वहाँ प्रशांतभाई दिलीपभाई आदि हरिभ्कतों ने पू. महाराजश्री का भव्य स्वागत किया । वहाँ से हिन्दु टेम्पल में गये । वहाँ के भक्तों ने जयनाद के साथ पू. महाराजश्री का वंदन करते हुए स्वागत किया ।

धर्मकिशोर स्वामीने सुंदर कथा का रसपान कराया । बाद में पू. महाराजश्री की अमृतवाणी का सभी को लाभ मिला जिसकी सभी को प्रतिक्षा थी । पू. महाराजश्री ने जीवात्मा नश्वर शरीर को समझ ले तो इस लोक तथा परलोक में सुखी होगा ऐसा बताया । बाद में वहाँ से मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारने गये । वहाँ पू. महाराजश्री का भक्तों ने कतारबद्ध चरण स्पर्श किया । बाद में बलदेवभाई मधुसुदनभाई आदि भक्तों के घर पदार्पण किये । वहाँ से अपने निवास स्थान पर आये । पू. महाराजश्री का निवास दीलीपभाई त्रिवेदी के यहाँ था ।

दि. १७-१२-२००७ की प्रातः कृत्य करके पू. महाराजश्री प्रशांतभाई के घर पदार्पण करने के लिये निकल पड़े । वहीं प्रातः नास्ता किये । बाद में सात-आठ हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण किये । सभी के यहाँ अपनी वाणी का लाभ देते हुए दोपहर में दो बजे के आसपास अपने निवास स्थान पर पहुंचकर शालीग्राम भगवान को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण किये । दिलीपभाई के यहाँ सत्संग का अच्छा कार्यक्रम हुआ । सभी उन्हीं के घर महाराजश्री का दर्शन करने आते रहे । पुनः रात्रि में सान्फ्रासिन्को एरपोर्ट से फिलाडेल्फिया के साउथजर्सी चेरीहील मंदिर पधारे।

अपना पूर्व आफ्रिका सत्संग स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी असरग्रस्तों के सहारे

पूर्व आफ्रिका के केनिया देश में वहाँ के स्थानिक पार्लामेन्ट के निर्वाचन का विपरीत परिणाम आने से यहाँ पर भयंकर तूंफान हुआ जिस में अनेक भारतीय एवं गुजराती लोग मृत्यु को प्राप्त किये । हजारो लोग बेघर हो गये । अनेकों लोग अपना घर छोड़कर मंदिर की शरण लिये । इस राजकीय तूफान में अपने बहुत सारे हरिभक्तों पर भी असर हुई थी । केनिया के ऐसे भयंकर स्थिति का समाचार अपने प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को दैनिक समाचार पत्रों से तथा टी.वी. के माध्यम से होते ही त्वरित केनिया के अलग-अलग नाईरोबी, मोम्बासा, किसुमु, एल्ड्रोइट, नकुरु इत्यादि शहरों में वसने वाले हरिभक्तों को फोन-फेक्स से सम्पर्क करके प्रतिदिन समाचार लेते रहे । इसके बाद स्वामिनारायण मंदिर भुज के महंत स्वामी को भी सहायता के लिये आज्ञात्मक प्रेरणा किये थे ।

अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वादात्मक प्रेरणा से तथा भुज मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन से अपना पूर्व आफ्रिका सत्संग स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी के सभी हरिभक्तों ने जीवन की आवश्यक वस्तु को विपुल मात्रा में उपलब्ध कराकर असर ग्रस्तों की सहायता की थी । जिस की कीमत वहाँ के हिसांब से २० लाख सीलींग्स जितनी होती है, उस प्रमाण में वस्तुओं का वितरण करने के लिये पार्लामेन्ट के सभ्य तथा रेडकोर्स के जनरल सेक्रेटरी को अपने मंदिर में आमंत्रण देकर अपने मदंर में पधारे हुए स्वामी श्रीहरिदासजी आदि संत मंडल तथा अध्यक्ष श्री लक्ष्मणभाई राघवाणी, उपाध्याय देवशीभाई गरारा, कोषाध्याक्ष मनजीभाई राधवाणी, मंत्रीश्री तथा कार्यवाहक समिति के सदस्यों की उपस्थिति में सभी एकत्रित की गई धन राशी एवं सामग्री को अर्पित की गई थी ।

अपनी यह मानव सेवा तथा इस आपातकालीन स्थिति में अपना मंदिर सदा अग्रसर रहने की जानकारी होते ही रेडक्रोर्स तथा लोक सभा के मेम्बर खूब आनंदित होकर बोले कि मूल संप्रदाय स्वामिनारायण गुजरात - कच्छ के सत्संगियों की ऐसी सेवा प्रवृत्ति के हम आभारी है । इस तरह अपने नाईरोबी मंदिर द्वारा असर ग्रस्तों की सेवा की गई थी ।

(मंत्री गोरसिया भीखालाल पु.आ.स.स्वा. मंदिर नाईरोबी)

प.पू. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम के विषय में हरिभक्तो को सूचना

समस्त सत्संग को सूचना है कि अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रसंगानुसार कार्यक्रम का ध्यान देकर गाँव तथा शहर के सभी हरिभक्त तीन मास पूर्व प.पू. अपने आचार्य महाराजश्री के पास डायरी में कार्यक्रम का नोंट करा जावें, यह सभी सत्संगी जानकारी कर ले ।

अन्तर्यात्रा

"सुख के सूर्य बनकर आये सहजानंद"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

संवत १८५६ सावन कृष्णपक्ष की छठ थी । सावन का महीना होते हुए भी उस दिन सूर्य का थोड़ा प्रकाश दिखाई दे रहा था । पनिभरिन अपने माथे पर तथा कमर पर घड़ा रखकर लोज गाँव की बावली में पानी भरने आयीं । उन सभी की दृष्टि नीलकंठवर्णी पर पड़ी । देखते ही सभी अवाक रह गयीं । उस दिव्य मनमोहक मूर्ति में मानो सब डूब गई हों । सभी स्त्रियां आपस में वात करने लगी "देखे तो सही कैसा सुंदर बाल ब्रह्मचारी बैठा है । जैसे कोई राजकुमार ही ब्रह्मचारी बनकर आया हो । इतनी छोटी उम्र में क्यों वैराग्य लिया होगा ? इन की मां को कितना दुःख हुआ होगा । चलो हम सभी इन से पूछती है ।

एक के बाद एक पनिभरिन आकर नीलकंठ को पूछने लगीं । आंख खोले सभी उनसे पूछने लगीं क्यो इतनी छोटी उम्र में वैराग्य ले लिये । क्यां मा-बाप प्यार नहीं करते थे ? या भाई भाभी से नाराज होकर वैराग्य लिये है ?

दूसरी ने कहा "इनकी शरीर तो देखो, सभी नसें दिखाई दे रही हैं । कितना तप किये हैं । कांटावाले मार्ग पर कैसे चलें होंगे ? जंगल तथा पहाड़ो में रात कैसे वितायें होंगे ? अन्न-जल के बिना दिन कैसे बीता होगा ? ऐसी कोमल शरीर लेकर पत्थर या बालू में कैसे सोये होंगे ? ऐसी खुली शरीर से ठन्डी-गर्मी-वरसात का सहन कैसे किया ? बावले योगी हमारे साथ आप बात करो ?" परंतु नीलकंठ वर्णी तो ध्यानावस्थित थे । अंत में सभी पनिभरिन विन्ती कीं कि हे प्रभु ! हे बालयोगी ! कृपा करके घर पधारिये । हम नित्य रसोई बना कर भोजन करायेंगी । हमारी सेवा स्वीकार कर हमारे घर को पावन कीजिये ।

नीलकंठ तो ध्यान में लीन थे । बाद में सभी पनिभरिन हार कर अपने-अपने घर चली गई ।

श्रावण मास का बरसात रिमझिम रिमझिम बरस कर चला गया । पवन की सुसुवाट नीलकंठ वर्णी के बांलो को उड़ाने लगा । तेजस्वी कपाल तथा ध्यानमग्न आखों की शोभा निखर रही थी । मुख पर मंद मुस्कान थी । गले में कंठी पास में दंड-कमंडलु था । मृगचर्म पर बैठकर निरन्तर ध्यान करने से नीलकंठ वर्णी की शरीर से ब्रह्मतेज झलक रहा था । बावली के चारो तरफ मानो तेज की आभा फैल गयी थी ।

इतने में रामानंद स्वमी के शिष्य सुखानंद स्वमी वहाँ पर स्नान करने आये । उनकी नजर नीलकंठ पर पड़ी । देखते ही उनकी इन्द्रियां वर्णी के स्वस्म में विलीन हो गयी । वे नजदीक जाकर नीलकंठ को प्रणाम किये । ध्यान में से जगाकर पूछे "बाल ब्रह्मचारी आप कहाँ से आ रहे हैं ? कहाँ जा रहे हैं ? आपके माता पिता कौन हैं .

नीलकंठ वर्णी ने प्रत्युत्तर दिया "ब्रह्मपुर से आ रहा हूँ, ब्रह्मपुर जाना है, वहाँ जो ले जाय वहीं यथार्थमाँ बाप है । सुखानंद स्वामी ऐसा उत्तर सुनकर अवाक रह गये । ए तो व्यास जीकी तरह विद्वान ब्रह्मचारी लग रहे हैं ।

बाद में नीलकंठ वर्णी ने उनसे प्रश्न पूछा "मुनिवर्य ! जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म का क्या स्वस्म है ? इस प्रकार का प्रश्न सुनकर सुखानंद स्वामी तो दंग रह गये । उन्होंने कहा "इस प्रश्न का उत्तर हमें नहीं आता परंतु यहीं के गाँव में हमारे गुरु रामानंद स्वामी का आश्रम है । आश्रम में मुक्तानंद स्वामी नाम वाले उन्हीं के समर्थ शिष्य रहते हैं । वे हमारे बड़े गुरुभी हैं । आप उन्हीं के पास चलें । मिलने योग्य संत हैं । आपके प्रश्न का उत्तर भी वे करेंगे । आप नहीं आवें तो उन्हीं को यहाँ बुलालाऊँ ।

नीलकंठवर्णी स्वामी की निष्कपट वाणी सुनकर अपने गुरुभाई के प्रति ऐसा निर्मल भाव देखकर श्रीहरि अत्यंत प्रसन्न होकर कहने लगे । स्वामी ? वैसे हम तो गाँव में या शहर में जाना उचित नहीं समझते, परंतु ऐसे समर्थ संत का दर्शन करने के लिये हम अवश्य आपके साथ रामानंद स्वामी के आश्रममें आयेंगे ।

सुखानंद स्वामी के आनंद की कोई सीमा न रही । श्रीहरि तुरंत खड़े होकर सुखानंद स्वामी के साथ रामानंद स्वामी के आश्रम में गये । मुक्तानंद स्वामी नीलकंठ वर्णी का स्वागत किये । नीलकंठ वर्णीने वहीं प्रश्न पुनः मुक्तानंद स्वामी से पूछा । मुक्तानंद स्वामीने जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म के स्वस्म को संतोषकारक समझाया । बाद में मुक्तानंद स्वामी ने कहा मैने अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर दिया है । यदि आप यहाँ रहकर हमारे गुरु रामानंद स्वामी से मिलें और उन्हीं से इस का उत्तर सुनें तो बहुत आनंद होगा । स्वामी तो साक्षात् उद्धव के अवतार है । सभी को राधाकृष्ण की भक्ति कराते हैं ।

नीलकंठ वर्णी ने देखा कि रामानंद स्वामी के शिष्य शुद्ध एवं पवित्र हैं । इनमें कोई व्यसन नहीं है । केवल भगवान की भक्ति करते हैं । इसलिये श्रीहरिने कहा "स्वामी आप अच्छा उत्तर दिये हैं । मैं इस प्रश्न का उत्तर जहाँ भी गया हर तीर्थो में महात्माओं से पूछा लेकिन कोई उत्तर नहीं दे सका । इसका

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १८

सत्संग भावपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

आप कब निवृत्ति लेंगे

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

सुंदरजीभाई सुथार को श्री रामानंद स्वामीने कंठी बांधी थी। उन्होंने स्वामिनारायण भगवान की उपासना स्वीकार की थी। इतने बड़े सत्संगी होते हुए भी एक गलती कर बैठे थे। ध्यान देने की वात तो यह है कि बड़े-बड़े महापुरुषो के जीवन में क्षति शास्त्रों पुराणों में वर्णित है, लेकिन इस में रहस्य छीपा हुआ है।

एक बालक को खराब आदत यह थी कि जब वह केला खाता तो छिलका बीच रास्ते में डालता। उसके पिता को डर रहती कि हमारे में से छिलके पर फिसल कर कोई गिरेगा या अंजान व्यक्ति गिरेगा। उसके पिता उसे कई बार समझाये कि केला खाकर छिलका सड़क पर मत फेंका करो। लेकिन उसके विचार में यह बात उतरती नहीं रही। बल्कि सामने से पूछा कि क्यों न फेका जाय। पिता विचार करने लगा कि इसे समझाने का एकमात्र रास्ता यह है कि इसके सामने छिलका पर चलकर गिरकर दिखाना होगा। तभी यह समझेगा। एक दिन वे ऐसा ही किये। वह छिलका जब फेंका तो उसी के ऊपर स्वयं चलने लगे और फिसलकर गिर गये। यह देखकर बेटे ने पूछा क्या इस पर चलने से लोग गिरजाते हैं, तब पिता ने कहा हाँ। आज हम गिरे कल दूसरा गिरेगा और शरीर का कोई अंग टूट सकता है।

यद्यपि पिता जानबूझ कर गिरे थे लेकिन इससे उस बालक को बोध मिल ही गया। इसी तरह महापुरुष दूसरे के दोष को अपने जीवन का प्रेक्टिकल करके बताते है। जिससे उसका दोष निकल जाय। जब शक्तिशाली गिर सकता है तो सामान्य संसारी की क्या बात है।

सुंदरजीभाई स्वंय सत्संगी थे। पूर्व के मुक्त थे लेकिन इनके जीवन में एक ऐसी घटना हुई थी। स्वंय भुज राज्य के सचिव थे। उनके यहाँ बड़े-बड़े मिलने आते अच्छे राजकारणी थे। निष्कुलानंद स्वामीने तो प्रारम्भ में उनका परिचय दिया। "सत्संग वे शिरोमणि" इस तरह सत्संग में शिरोमणि होते हुए भी परेशानियों से घिरे हुए। स्वामी ने लिखा है कि "सत्संग में शिरोमणी भी रखते अधिक प्रवृत्ति।" सुंदरजी सुथार भी भक्त शिरोमणी होते हुए भी प्रवृत्ति बहुत रखते थे। उनके घर आने वालों की संख्या खूब थी। आज फलाने साहब कल कलेक्टर साहब मिलने आने वाले हैं। कोई अधिकारी आवे किसी को रोका नहीं जाता था। इसी संदर्भ में स्वामी लिखते है कि "मोटा मोटा माणसनो मोबती, शेठ शाहुकारनो सोबती" बड़ो के साथ संबन्ध रखते लेकिन वे सब कैसे थे ? स्वामी लिखते हैं कि "वे सभी हरि से विमुख, तेनी साथे नित्य प्रत्ये सख।"

बड़े तबके के लोग सत्संगी न होने से प्रभु से विमुख ही कहे जायेंगे। संस्कार के नाम पर शून्य लेकिन साहब बन बैठे। तो इन सुंदरजीभाई का बड़ो की संगत में सारा जीवन बीत गया। उन्हें विचार आया। स्वामी उसी संदर्भ में लिखते हैं कि - "खोटा संसारी स्वार्थी मांही, आव्यो अंत कमाई गई" भेडुं करी करीने कर्युं त्यारे देह थाक्यो, शरीरमां तकलीफ शरुतई। शरीर की चेनता शक्ति समाप्त हो जाती है। बेभान अवस्था में ये लगता है। चलो साहब आये। अरे ये तो फलाने साहब, आओ - आओ, वैठिये। उन्हें दूध पिलाओ इस तरह बोलने लगता है। इस लिए गुजराती भाषा में बकवास शब्द का प्रयोग किया जाता है। कारण यह कि जीवन में जो बैठा होता है वही व्यक्ति जल्पता है। सुंदरजीभाई का बकवास प्रारम्भ हो गया। आप लोग इसका अनुकरण नहीं करना। इसलिये पहले ही केला के छाल की बात की है, पिता फिसल कर बताये।

सुंदरजीभाई जैसे जो भगवान स्वामिनारायण से मिले थे उनकी नीति-नियम को जानते थे, उनके घर भगवान पधारे थे तो भी अंतिम अवस्था में ऐसी बकवास चालूकर दिये। आओ साहब, कैसे हैं ? हाँ-हाँ आप का काम हो जायेगा। मैने राजा साहब को कह दिया है। इनकी इस प्रकार की प्रक्रिया से सभी परेशान हो गये और महाराजसे कहे कि महाराज ? सुंदरभाई के मन से यह सब निकलेगा महाराज ने कहा यही जीवन में सुंदरभाई ने किया है जो जीवन की प्रवृत्ति बन गयी है। इनके साथ यह भूत जायेगा। क्योंकि इसे ही इन्होंने अपने में उतारा है।

कोई भक्त बिमार हुआ, उसके घर संत पधारे अंतिम अवस्था थी। साधु को देखते ही बोलने लगा बेच दो.... बेच दो ..... साधुने पूछा बापूजी क्या कहते हैं ? बेटेने कहा पिताजी आपने जीवन भर व्यापार किये है, इसलिये ऐसा बोलते है। पिताजी को यह खबर नहीं कि वे अब मृत्यु के नजदीक हैं। जो जीवन में किये है वही बोल रहे हैं। कितने में बेचना है ? उसी पर वे कह रहे हैं कि बेच दो.... बेच दो.... । अत्यन्त विचारणीय वात है। सुंदरजीभाई की स्थिति अंत मे कुछ ऐसी ही हो गयी थी, जब वे होश में आते तो सभी कहते कि आप बक-बक क्यों करते हैं, स्वामिनारायण स्वामिनारायण करते तो आप की भला हो जाती। तब उन्हें पश्चाताप होता। इसी बात पर स्वामीने लिखा है कि -

"आवो सत्संग श्रीजी महाराज, तेने मूकी में कर्यु आ काज।"

ऐसा सत्संग, ऐसे श्रीजी महाराज, सर्व अवतारके अवतारी भगवान स्वामिनारायण की याद के बदले प्रवृत्ति-प्रवृत्ति-प्रवृत्ति का ही विकास किया। यही वे भूल किये लेकिन पश्चाताप करते-करते भगवान की भजन करके भगवान के धाम में गये।

•

साधु में सुना हुआ काम लगा

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक शेठ थे। शेठ की गाँव में खूब प्रतिष्ठा थी। व्यवहारिक कार्य में खूब लगे रहते। जब कोई मंदिर में जाने की बात करे तो कहते है कि जब मैं वृद्ध होऊंगा तब जाऊँगा। अभी हाथ पैर चल रहा है तो कमाने का ही कार्य करना है। एक बार गाँव में संत कथा करने आये उस सयम ग्रामवासियों शेठजी को साथ ले गये, वे गये भी लेकिन आरती पूरी होते ही वहाँ से निकल गये, कथा सुनने के लिये रुके ही नहीं। रास्ते में जाते समय कुछ लोगोने पूछा शेठ जी आप क्यों चल दिये ? अरे भाई आप जैसे कुछ लोग मंदिर में खींचकर ले गये थे। अब आरती करके घर जा रहा हूँ। कथा में क्यों रुके नहीं ? में पल्थी मारकर बैठ नहीं पाता हूँ। चबूतरा तो है नही, उसी पर बैठकर कथा सुन सकते हैं। अब कल आयेंगे। अरे शेठ ! आज कल क्यों कर रहे हों। अभी चलिये। शेठ के साथ चर्चा में थोड़ा समय बीत गया। लेकिन भक्त की जीत हुई। शेठ कोमंदिर वापस लाये। कथा पूर्ण होने वाली थी इतने में शेठ मंदिर के चबूतरे पर आकर बैठ गये। बैठकर वक्ता के सामने देखने लगे। वक्ता की कथा का शब्द कान में पड़ा कि "इसलिये भक्तजन" भगवान की परछाई होती नही है। इसके बाद जय बोल दी गयी। कथा सुनकर सभी भक्तजन बाहर आये। उस शेठ को देखकर सभी प्रसन्न हुए। अरे शेठजी आप कथा सुनने के लिये बैठे है ? बहुत अच्छा हुआ। बाद में शेठ घर आये और विचार करने लगे कि प्राणीमात्र की परछाई होती है लेकिन भगवान की परछाई नहीं होती। कैसी गजब की बात है। ऐसा विचार करते हुए सो गये। मध्यरात्री में दरवाजा खट खटाने की आवाज आई। अरे भाई कौन है ? शेठ जाकर पूछे। उत्तर मिला मैं विष्णु हूँ। शेठ दरवाजा खोले। सभी जाग गये। बाहर आकर देखा तो चतुर्भुज स्म-हाथ में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुए मस्तक पर मुकुट तथा पीताम्बर पहने हुए भगवान के स्म में देखकर शेठ की मां चरण पर गिर पड़ती है। उस समय शेठने कहा मां स्कजा ? आप कौन हैं ? मैं साक्षात् विष्णु हूँ। मेरी पूजा करो। मुझे भेंट में दक्षिणा दो। आप खूब खुश होंगे। शेठ जो कथा में सुने थे वह सब बात याद आ गयी। कि भगवान की परछायीं होती नहीं है। शेठ तुरंत दीपक जलाये, ज्यों ही आगे लाये कि परछाई तो दिखाई देने लगी। वे समझ गये कि यह कोई ठग है, इसलिये शेठने उसे युक्ति पूर्वक पकड़ लिया। सभी आश्चर्य में पड़ गये कि यह क्या ? क्या आप भगवान को देखे हैं ? जिससे इस ठग को आप पहचान सके। तब शेठ ने कहा मैं तो मंदिर में भी नहीं जाता तो भगवान को क्या जानूँ, लेकिन सत्संग के प्रताप से यह जान सका। कल मैं कथा में सुना था कि भगवान की परछाई नहीं होती। इस कथा का एक वाक्य हमारी रक्षा किया। यदि एक वाक्य में इतना गुण है, तो जो प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक सत्संग कथा सुनते हैं उनको कितना फायदा होता होगा। अब वह शेठ प्रतिदिन कथा में जाने लगा। मित्रो ! इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने हमारे सुख के लिये कुछ भी छोड़ा नहीं है। अपने आश्रित रोग, शोक, मनस्ताप, छल, कपट इत्यादि से कैसे बचें इसके लिये अनेक उपाय किये हैं। इसलिये शिक्षापत्री में आज्ञा किये हैं कि प्रतिदिन सायंकाल भगवान के मंदिर में जानकर कथा, कीर्तन सुनना चाहिए।

पृष्ठ ५ से आगे.....

हे युवानो !!

यह अपना युवाधन यदि श्री नरनारायणदेव, आचार्य महाराजश्री तथा संतो के लिये उपयोगी न बने तो किस काम का ? इसकी अपेक्षा धरती पर न आये होते तो अच्छा। प्राणियों की मृत्यु के बाद अस्थि, दांत, शींग, चमड़ी इत्यादि सभी उपयोगी होता है। जब कि मानव की मृत्यु के बाद उसका कुछ भी काम का नहीं होता।

स्व सेवा के लिये पसीने बहाते हैं, इसी तरह पर सेवा के लिये सत्संग की सेवा परम आवश्यक है अच्छे काम में अविवेक एवं आलस्य बाधक बनता है। प्रत्येक युवान अपनी शक्ति एवं सम्पत्ति के अनुसार सत्संग का कार्य करें। धर्म, संस्कार से अपने जीवन को सुदृढ बनाकर सत्संग में लगजाना चाहिये। स्वामिनाारयण भगवान की भी आज्ञा है कि माता-पिता, गुरु, रोगातुर की सेवा करना। जिस प्रकार युवक कार्य कर सकें उसी तरह युवतियां भी सत्संग का कार्य करें।

युवान मित्रों ! कोई व्यक्ति हो या समाज हो विना साथ सहकार के चलता नहीं। सहकार के विना उद्धार नहीं। यथार्थ ज्ञान देने वाले के विना जीवन में सफलता नहीं मिलती। युवानों में संत्संग स्री तेल भरकर नवपल्लवित करने का सभी को प्रयास करना चाहिये। यही जीवन की सफलता है।

युवानी अर्थात् पावरहाउस, एक उत्तम कार्य शक्ति का संग्रह, परंतु आजकल शरीर की अपेक्षा देखाव पर खूब ध्यान दिया जा रहा है। युवा शक्ति को कुछ न कुछ कार्य करते ही रहना चाहिये। प्रतिदिन एक घंटे श्रीजी महाराज का ध्यान करना चाहिये। इससे खराब विचारो का नाश हो जायेगा। जो आप के लिये तथा सत्संग के लिये उपयोगी होगा।

भक्ति सुधा

हम आपको ही जगाते है

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

एकबार छपैया में भक्तिमाता के घर उनकी बहन वसंतबाई तथा चंदनबा रहने आयी थी। वसंतबाई ने उनके पुत्र माणेकर को साथ लाई थीं तथा चंदनबा ने अपने पुत्र वस्ती को साथ लाई थीं। उन्होने आकर भक्ति माता को पूछा "घनश्याम घर पर नहीं है ?" भक्तिमाताने कहा "फिरोजपुर गये हैं थोड़ी देर में आ जायेंगे" फिर शाम होते ही धर्मपिता घनश्याम तथा इच्छाराम को लेकर घर आये।

दोनो मौसी ने घनश्याम तथा ईच्छाराम को मीठाई दी। फिर रात को खाकर सब लोग सो गये।

दुसरे दिन सुबह चंदन मौसी तथा वसंतमौसी चक्की पर अनाज पीसने के लिए बैठी चंदनमौसी को हुआ की चलो प्रातःगीत ही गाते हैं। यह सोच कर तुलसीदास का प्रातःगीत गाना शुरु किया।

"उठो लाल प्रभात भई है ....."

यह सुनकर वहाँ खटिया पर सोते हुए घनश्याम बोले "मौसीजी, हम तो यहाँ जग ही रहे है मुझे क्यों उठने को कह रही हो ? क्या काम है आपको ?" यह सुनकर दोनो मौसी बोली" आपको कौन उठा रही है ? हम तो भगवान को उठा रही है।"

यह सुनकर घनश्यामने खटिया पर पडे-पडे ही चक्की को पकड़ लिया दोनो मौसी ने उसे घुमाने का खूब प्रयास किया पर वह घुमी ही नहीं।

इसलिए घनश्याम प्रभु फिरसे बोले "मौसी आप हमे ही उठाती थी ऐसा कहो, आप जिस भगवान को जगाते हो वह भगवानने ही घंटी पर हाथ रखा है।"

इतने में भक्तिमाता दिया लेकर घरमे में आयी तो दोनो मौसी बोली "घनश्याम को जरा कहो घंटी पर से हाथ ले ले। हमसे उनका हाथ नहीं हट रहा है।"

यह देख कर भक्तिमाता थोड़ा हंसी फिर कहीं "घनश्याम, हाथ उठा लो।"

माता का आदेश सुनकर घनश्याम बोले "मा, इन दोनो मौसी को पूछो कि ये किसे जगा रही हैं ?"

फूल जैसे कोमल घनश्याम का नाजुक हाथ चक्की पर अटका है फिर भी हाथ और घंटी कुछ हिल नहीं रहा था। दोनो मौसी यह देख कर चौक गयी। दोनो को निश्चय हो गया कि सचमुच घनश्याम ही भगवान है इसलिए वसंत मौसी बोली "हे घनश्याम, हम तो आपको ही जगा रही थी बस अब तो हमे पीसने दो।"

यह सुनकर घनश्याम बोले "अगर पहले ही यह बोल दिया होता तो यह चक्की न रुकती न आपको देर होती।"

दोनो मौसी फिर कहने लगी "हे घनश्याम आप ही भगवान हो उसकी हमे आज खबर हुई। हम आपसे मांफी मांगती है।" यह कह कर घनश्याम के पाँव छुये फिर गोद में बिठाया।

श्री घनश्याम प्रभु भी हँस कर दोनो मौसी के सामने देखने लगे "अब हमे पहचाना मौसी।"

•

महाराज की मूर्ति का ध्यान

- दिशाबहन हितेशभाई राठोड

श्री पुरुषोत्तम भगवान की मूर्ति सदा विराजमान हो यह दृढ निश्चय हो तथा भगवान की उपासना करे, पंच विषय का अभाव हो, वैराग्यवान हो फिर भी देहभाव आ जाता है। गढड़ा के अंतिम प्रकरण के ३१ वें वचनामृत में कहा है कि "हरि मेरे हालरकी लकरी" यह भजन गाया तो श्रीजी महाराज बोले इसका अर्थ हालर नामका एक पक्षी है। जिसके बच्चे के पास जन्म से ही एक छोटी सी लकड़ी जैसा होता है जिसे वह कभी नहीं छोडता यह संतोने लिखा है जमुना के तीरे ठाडो का अर्थ संतोने यह किया है कि जमुना के किनारे कृष्ण खड़े है वह भगवान अपने भक्तो को याद कर रहे है। इस सिद्धांत का अर्थ यह है कि भगवान की मूर्ति को पकड़कर रखना तथा ध्यान करना तो कैसे करना।

सर्व प्रथम तो भगवान की मूर्ति के चरण के १६ चिन्हो का ध्यान करना। जब-जब ध्यान करने बैठे तब आत्मा को ब्रह्मरूप प्रकाशमान समझकर खुद अक्षरधाम में श्रीजी महाराज के समक्ष है ऐसा सोचना। वही महाराज के दोनो चरणारविंद में १६ चिन्ह है। उनके दाहिने चरण में नव चिन्ह है। अष्टकोण, उर्ध्वरेखा, स्वस्तिक, जामुन, जव, वज्र, अंकुश, केतु, पदम तथा बायें चरण में सात चिन्ह है। त्रिकोण कलश, गोपद, धनुष, मीन, अर्धचंद्र, व्योम ये चिन्ह है। उनका ध्यान करना फिर दाहिने चरण की चार अंगुलियो का तथा अंगुठे का ध्यान करना। पश्चात भगवान के चरण तल का ध्यान करना चाहिये। चरण में जितने चिन्ह है उनका क्रमशः ध्यान करना चाहिये। नाभी का उदर की त्रिबली का, छाती का, स्तन का, हृदय में श्री वत्सचिन्ह का ध्यान करना चाहिये। कंठ में

तिल का ध्यान करना चाहिये । दोनो नेत्रों के कमल की तरह शांत स्म का ध्यान करना चाहिये । नासिका का ध्यान, मुखारविंद का ध्यान, अधरोष्ठ का ध्यान करना चाहिये । जीभ का ध्यान दंत पंक्तियों का ध्यान, भाल का ध्यान भाल में तिलक का ध्यान, मस्तक पर सुंदर केश का ध्यान शिखा का ध्यान, सम्पूर्ण मूर्तिका ध्यान करना चाहिये । इस तरह एक-एक अंग का ध्यान करते हुए छवासोंछवांस में स्वामिनारायण भगवान का नाम कीर्तन करते रहे । जिससे उस मूर्ति का स्म हृदय में उतरता जाय । परिणाम स्वस्म हृदय में आनन्द का सुख, शांति बढती जाय । भगवान की किस मूर्ति का ध्यान करना चाहिये, इस विषय में जो शास्त्र में लिखा हो या वृद्ध संत जिसे प्रमाणित करते हों । हम जिस मूर्ति का जिसमें घनश्याम महाराज, हरिकृष्ण महाराज सहजानंद स्वामी इत्यादि जो स्म है उन्हीं का ध्यान करना चाहिये । जिस प्रकार शास्त्र में वर्णन हो उसी प्रमाण के अनुसार एक-एक अंग का ध्यान करते रहना चाहिये । प्रकाश युक्त स्वस्म को हृदय में उतारते रहना चाहिए । कीर्तन में लिखा है कि - शितल शांत छे रे तेज नी उपमा नव देवाय । इस प्रकार तेजोमय भगवान की मूर्ति को अंतर में उतारते रहे । ऐसे स्वस्म का क्या वर्णन संभव हो सकता है ?

ऐसे स्वस्म में तल्लीन होकर उस प्रभु के मूर्ति में मन नित्य बना रहे ऐसी श्रीजी महाराज के चरणों में प्रार्थना ।

•

पृष्ठ १४ से आगे..... सत्संग सुरभि

उत्तर आप ही कर सके हैं । इसके अलांवा मेरे पिता धर्मदेवभी रामानंद स्वामी के शिष्य थे । ऐसी वात मेरे पिताजी ने मेरे बाल्यकाल में की थी । इसलिये रामानंद स्वामी के दर्शन की इच्छा है ।

मुक्तानंद स्वामी ने पुनः विन्ती की "हमारे गुरुजी इस समय कच्छ देश में सत्संग के लिये गये हुए हैं । वे जब तक नहीं आवें तब तक आप यहीं रहें । हम सभी साथ रहकर सत्संग करेंगे ।

नीलकंठ वर्णीने मुक्तानंद स्वामी की विन्ती सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

इस प्रकार सात वर्ष एक मास तथा इग्यारह दिन तक वन विचरण करके अंत में लोज गाँव में रामानंद स्वामी के आश्रम में आकर नीलकंठ वर्णी रुके । उत्तर दिशा में छपैया गाँव में उदित हुआ सहजानन्दी सूर्य, लोज गाँव में थोड़े समय के लिये रुका और सुखानंद स्वामी ने उस सूर्य को आश्रम में खींच लाया ।

गुजरात के सौराष्ट्र की भूमि पर संवत १८५६ के श्रावण कृष्ण छठ के दिन सुख एवं आनंद के प्रणेता ऐसे स्वामीश्री सहजानंद महाराज नीलकंठवर्णी के स्म में पधारे और इस धरा को धन्य कर दिये ।

पृष्ठ ८ से आगे..... वचनामृत-कारीयाणी

भी आवश्यक है । भगवान के सामने दलील करना उचित न समझकर दादा ने प्रभु को ही न्याय करने के लिये कहा । देखते देखते महाराज ने मृत्यु दंड का आदेश कर दिया । नतमस्तक होकर दादा खाचर स्वीकार करके चल दिये । थोड़ी देर में सभा पूर्ण होने से पहले सभा में लोही लुहान हाथ के साथ उपस्थित हो गये । उन्हें देखकर स्वंय श्रीजी महाराज भी चौंक उठे यह क्या किये ? *(क्रमशः)*

अलभ्य सेवा का अवसर

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री तथा पूज्यपाद बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद एवं आज्ञा से सभी सत्संग समाज को ज्ञात हो की स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण ने जिस भूमि पर सर्व प्रथम मंदिर का निर्माण कराकर स्वयं अपने बाहों में श्री नरनारायणदेव तथा स्वयं की मूर्ति प्रतिष्ठित करके अपने हाथों से मोक्ष मार्ग का प्रधान केन्द्र प्रस्थापित किया ।

भगवान श्रीहरि की आज्ञानुसार स.गु. आनंदानंद स्वामी ने तीन शिखर वाला मंदिर का निर्माण करवाया है । इस मंदिर को आज करीब १८५ वर्ष पूर्ण हो रहा है । जिस में समय तथा संयोग के अनुसार जीर्णोद्धार करने की आवश्यकता हुई है । इस मंदिर के फ्लोरिंग में मारबल पत्थर लगाने की योजना है । मंदिर के अग्रभाग में छोटे-छोटे शिखर तथा मंदिर के चारो तरफ प्लींथ को भी बंसी पहाड़पुर वाले पत्थर की नवीनता से युक्त मजबूत एवं शिल्प शास्त्र के अनुसार सोमपुरा के मार्गदर्शन में जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ हो गया है । इस प्रसादी के मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य में अलभ्य सेवा का लाभ जीवन में पुनः नहीं मिलेगा । इसलिये इस सेवा से आप वंचित न रह जांय, जिसके लिये सभी हरिभक्तों को इस सेवा कार्य में सहयोग के लिये नम्र निवेदन है ।

जिसकी धन राशी को श्री नरनारायणदेव की आफिस कालुपुर मंदिर में जमा कराकर पक्की रसीद प्राप्त कर सकते हैं । जिसकी जानकारी के लिये प्रत्यक्ष मिले या फोन द्वारा संपर्क करें ।

लि. महंत स्वामी
का जयश्री स्वामिनारायण

समस्त सत्संग जोग

दि. १९-१-२००८ के दिन सुबह ११-३० बजे त्यागी पंच की मीटींग श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद की ओफिस में रखी गयी थी ।

इस मिटींग में अहमदाबाद ताबा के मूली मदिर के त्यागी पंच की मीटींग दि. १९-०-२००८ को हुई थी । जिस के ठहराव नं.-२ में जो निर्णय किया गया है उसका हमारे त्यागी पंच ने सर्वानुमत से अनुमति दी है । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ठराव भेजा गया है । (सर्वानुमत से मंजूर)

मूली मंदिर के त्यागी पंच का ठराव नं. १ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली के त्यागी (१) स्वामी नारायणसेवादासजी गुरु स्वामी श्रीहरिदासजी (२) स्वामी नारायणस्वरूपदासजी गुरुस्वामी श्रीहरिदासजी (३) स्वामी प्रेमवल्लभदासजी गुरुस्वामी नारायणसेवादासजी (४) पार्षद निलेश भगत गुरु स्वामी नारायणसेवादासजी (५) पार्षद भरत भगत गुरु स्वामी नारायणसेवादासजी (६) स्वामी घनश्यामस्वरूपदासजी गुरुस्वामी विज्ञानदासजी (७) स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी गुरुस्वामी नारायणसेवादासजी (८) स्वामी बालुमुकुंटदासजी गुरु स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी (९) स्वामी गोविंदप्रसाददासजी गुरु स्वामी शास्त्री गोपालचरणदासजी (१०) स्वामी हरिप्रकाशदासजी गुरु स्वामी गोविंदप्रसाददासजी (११) स्वामी हरिचरणदासजी गुरुस्वामी गोविंदप्रसाददासजी (१२) स्वामी विवेकसागरदासजी गुरुस्वामी नारायणप्रसाददासजी । यहाँ सभी त्यागी जो वर्तमान में स्वतंत्र संस्थाओं की रचना करके संचालन कर रहे हैं । ऐसे उपरोक्त त्यागियों को श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली के त्यागी पत्रक में से नाम निकालने का प्रस्ताव सभी ने मिलकर पारित किया तथा जिन त्यागीयों के जरिये श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद अथवा श्री राधाकृष्णदेव के अधीनस्थ या संलग्न संस्थाओं में प.पू. आचार्य महाराजश्री की अनुमति से किया जाये तो त्यागी के पत्रक में उनके नाम स्वीकार किया जायेगा । माननीय चेरीटेबल कमिश्नर साहब का आदेश लेना पड़ेगा ।

सर्वानुमति से पारित

ठहराव नं. २

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के त्यागी जो (१) स्वामी श्रीजीप्रकाशदाजी गुरुस्वामी धर्मजीवनदासजी (२) स्वामी उत्तमप्रियदासजी गुरुस्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (३) स्वामी ईश्वचरणदासजी गुरुस्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी धांगध्रा (नरसी टेकरी) में स्वतंत्र संचालन करते हुए रहते हैं । उनका अहमदाबाद मंदिर के त्यागी के रूप में नाम निकालने का प्रस्ताव सभी ने मिलकर किया है । सभी त्यागी धांगध्रा मंदिर के श्री नरनारायणदेव ताबा के माननीय श्री चेरीटेबल कमिश्नरश्री का आदेश लेकर अहमदाबाद मंदिर में त्यागी के रूप में नाम दर्ज करा सकते हैं ।

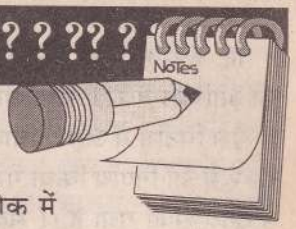
त्यागी पंच का प्रस्ताव प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री के पत्र क्र. **Per.Sec./58/07-08** दि. **19-1-2008** से मंजुर किया गया है ।

नोंट : जयश्री स्वामिनारायण के साथ ज्ञातव्य है कि आप की अध्यक्षता में ता. १९-१-२००८ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में त्यागी पंच की मिटींग में प्रस्ताव नं. १ तथा प्रस्ताव नं. २ को स्वीकृति दी जाती है ।

प्रस्ताव नं. १ तथा २ के अनुसार त्यागियों ने श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद अथवा श्री राधाकृष्णदेव से अलग होकर संस्थाओं का संचालन करते है जिससे अहमदाबाद/मूली के त्यागी के रूप में नाम रद किया जाता है । इस लिये सभी सत्संगी इस बात को जानलें । अतः उपरोक्त त्यागियों के साथ अहमदाबाद/मूली के त्यागी के रूप में कोई व्यवहार नहीं करना ।

त्यागी पंच मूली	त्यागी पंच अहमदाबाद
(१) शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (प्रमुखश्री)	(१) स्वामी नारायणस्वरूपदासजी (प्रमुखश्री)
(२) स्वामी कृष्णवल्लभदासजी	(२) शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
(३) स्वामी श्यामसुंदरदासजी	(३) शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(४) स्वामी नारायणप्रसाददासजी	(४) ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी
(५) स्वामी श्रीप्रकाशदासजी	(५) पार्षद नवराज भगत

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ सत्य वचन कब बोलना चाहिये ? ऐसा श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री के किस श्लोक में कहा था ?

प्रश्न : २ पांच आरती के नाम दिजीए ?

प्रश्न : ३ पांच महापाप कौन से हैं ?

प्रश्न : ४ संत को मंडवाड क्यो नड़ते हैं ?

प्रश्न : ५ क्रोध किसमें से उत्पन्न होता है ?

प्रश्न : ६ चौर्यासी लाख योनि के नियम समझाइये ?

प्रश्न : ७ वासना का स्थ क्या है ?

जनवरी २००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) खेंगार भक्त दर्शन करने हेतु आये तब श्रीजी महाराजने कहा "भगत ! आपका व्यवहार कैसा है ?" तब खेंगार भक्तने शुक स्वामी से पूछा कि महाराज बार-बार ऐसा क्यों पूछते हैं । तब पता चला की मिस्त्री को पगार देनी बाकी है । तब खेंगार भक्तने मिस्त्री को पगार के ३०० रु, श्रीजी महाराज की दवा के लिए १०० तथा संतो की रसोई के लिये १०० रु दिये । (२) "लई दूरी, दूध के गाडवा रे, मायाडे ढाले माव, घेला थईने गोवालीया रे, खूब करी ख्याल ।" (३) १. वस्तो कसारा, २. बलि, ३. सरस्वती, ४. जामुव, ५. सीता, ६. गंगा, ७. सिधा । (४) यह बात श्रीहरिने अलैया खाचर को कही । (५) पिबेक ब्राह्मण का अभिमान उतारा । (६) स.गु. कवि सम्राट ब्रह्मानंद स्वामी । (७) सीताजी, उर्मिलाजी, मांडवी, श्रुतकीर्ति

१. अरविंदाबहन एन. भावसार - चांदलोड़िया
२. विणाबहन भावसार - नवरंगपुरा
३. किशोरभाई - मोरबी
४. कंचनबहन बाबुभाई पटेल - रतनपुर
५. सां.यो. शिल्पाबा तथा शीतलबा - सुरेन्द्रनगर
६. पटेल ज्योत्सनाबहन राजुभाई - आणंदपुरा
७. राजेश भक्तिभाई भोलाभाई - अक्षरधाम, राणीप
८. पटेल गंगाबहन भक्तिभाई - झुलासण
९. पटेल माणेकबहन मणीलाल - दहेगाम
१०. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल
११. अंजनाबहन मनुभाई पटेल
१२. साकरबहन नटवरभाई पटेल
१३. गोरधनभाई शंकरभाई पटेल
१४. अमृतलाल के. मोदी
१५. विनोद बी. पटेल - वहेलाल
१६. हंसाबहन ईश्वरलाल पटेल - सापावाड़ा
१७. भगवतीबहन वी. सोसिदीया
१८. चंपाबहन आर. बूटीया

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. प्रश्न का उत्तर स्वच्छ अक्षर में होना आवश्यक है, जिससे सरलता से उसे पढा जा सके । पत्र के ऊपर एक ही व्यक्ति का नाम होना आवश्यक है, उसी का नाम अंक में छापा जायेगा ।

अलौकिक लाभ

श्री स्वामिनारायण म्युझिय की वेबसाईट पर द्विशताब्दी महोत्सव के प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के स्वहस्त लिखी हुई "शिक्षापत्री" तथा षष्ठी पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर स्वहस्त लिखे हुए "वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" इन दोनो की हस्तप्रत रखी गई है । जिसका लाभ प्रत्येक हरिभक्तों को लेना चाहिये ।

www.swaminarayanmuseum.com/org

सत्संग समाचार

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा उत्तरायण पर्व के निमित्त पर महादान

श्रीहरि द्वारा स्थापित मूल संप्रदाय की परंपार मकर संक्रांति के दिन पुण्य प्रसंग पर दान-पुण्य का अद्वितीय महिमा है। उसके उपलक्ष में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वस्मदासजी के मार्गदर्शन अनुसार इस वर्ष अहमदाबाद शहर तथा गुजरात बाहर के अन्य राज्यों में स्थापित तथा स्थायी लोग जो श्री स्वामिनारायण अंक के आजीवन सभ्य है उन सभी को उत्तरायण पुण्य पर्व के कार्ड मेईल कियें गये थे। जिसके परिणाम स्वस्म कई श्रद्धालु हरिभक्तों ने दान पुण्य किया था। वह दान श्री स्वामिनारायण मंदिर में उन्हों ने स्वयं दर्शन करके रोकड़ रकम, चेक, ड्राफ्ट तथा अनाज, तेल, घी, गुड़ आदि स्वस्म में दान करके सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवशी की कृपा के भागी बने थे। उन सभी हरिभक्तों को धन्यवाद।

- कोठारी स्वामी रामानुजदास

शिखरबद्ध मंदिरो में धनुर्मास तथा शाकोत्सव मनाया गया

नारायणघाट श्री स्वामिनारायण

यहाँ मंदिर में ता. ६-१-०८ के रविवार के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अनेक हरिभक्तों ने यजमान बन कर सेवा का लाभ लिया था। १५००० हजार से भी अधिक भाविकोने शाकोत्सव का महाप्रसाद लिया था। प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि विद्वान संतोने प्रेरक प्रवचन दिये तथा महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये।

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

ता. २०-१-०८ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर बाल सभा में छोटे बालकोने प्रवचन दिये। धनुर्मास में महंत शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से शा.स्वा. सत्यंसकल्पदासजीने 'श्रीमद् सत्संगिभूषण'' कथा का रसपान करवाया था। ता. ९-१-०८ के नाम स्मरण की धून की गई। इस प्रसंग पर प.भ. अमृतभाई मंदिर के ट्रस्टी प.भ. रतिभाई पटेल तथा प.भ. अमृतभाई पटेल आदि की सेवा प्रेरणात्मक थी। *- प्रविणभाई उपाध्याय*

नारणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा. स्वामी श्रीजीप्रसाशदासजी की प्रेरणा से धनुर्मास में रोज ५ से ७ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून कि जाती थी। उसके बाद महंत स्वा. शिक्षापत्री पर सुंदर उपदेश-विवेचन करते थे। अनेक यजमान हरिभक्तों की तरफसे सुंदर प्रसाद रोज दिया जाता था। ता. ६-१-०८ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में संत तथा हरिभक्तो की विशाल पदयात्रा नारणपुरा मंदिर से कालुपुर मंदिर तक आयोजित की गयी थी। धनुर्मास में प.पू. बड़े महाराजश्री नित्य शिंगार आरती उतारने हेतु कालुपुर मंदिर पधारते थे।

नारणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में आगामी उत्सव ता. ९-२-०८ से ता. १५-२-०८ श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण, ता. १६-२-०८ श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव तथा भव्य शाकोत्सव मनाया जायेगा। *-महंत स्वा. नारणपुरा*

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी गुस्मसाददासजी तथा कोठारी आनंद स्वामी की प्रेरणा से धनुर्मास में ठाकुरजी के समक्ष श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून समग्र मास तक प्रातः ६ से ७ तक की गयी थी। ता. २९-१२-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धून में पधारे थे। शनिवार होने के कारण श्री हनुमानजी की आरती अपने वरद् हाथों से उतारी थी। उसके बाद सभी संत, हरिभक्तोने आशीर्वाद दिये थे। अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वस्मदासजी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने कालुपुर मंदिर के महंत पद पर नियुक्त किया उसके बादं प्रथमवार यहां पधारे थे। उनका कांकरिया के महंत स्वामीने तथा हरिभक्तोंने फूलहार से स्वागत किया।

- नरोत्तम भगत

एप्रोच-बापुनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदास की प्रेरणा से धनुर्मास की धून धूमधाम से मनाया गया।

ता. २३-१२-०७ के माग शुक्ल पक्ष-१५ के दिन एप्रोच मंदिर से कालुपुर मंदिर तक पदयात्रा का आयोजन किया गया था। ता. ६-१-०८ के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था। प.भ. रमेशभाई अंबारामभाईने यजमान पद का लाभ लिया था। हजारो भक्तजनोंने धून में तथा शाकोत्सव में लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाया था। *- गोरधनभाई सीतापरा*

बावला में सभा

बालवा श्री स्वामिनारायण हाईस्कुल के भव्य मेदान में ता. ९-१-०८ के दिन सत्संग सभा तथा शाकोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा उनके वरद् हाथों से शाक का अद्भुत छौंक किया गया।

प्रासंगिक सभा में पूज्य पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम), शा. घनश्याम स्वामी (माणसा महंत) उनावा के महंत स्वांमी तथा राम स्वामीने सुंदर उद्बोधन किया था।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि, ''हमारे पिता कौन है ?'' उसका विचार करना चाहिए। उनका शरण स्वीकार्य करके उन्ही का केफ रखना चाहिए। बालवा तो हमारा गाँव है। तथा मैं बालवा का हूँ। इस प्रसंग के यजमान अ.नि. प.भ. छगनभाई पूंजाभाई चौधरी परिवार बने थे।

शाकोत्सव प्रसंग में चौधरी समाज के तमाम गाँव तथा

आसपास के गांव के हरिभक्तों ने सुंदर लाभ लिया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणास्म है ।

पू. पी.पी. स्वामी तथा शा. घनश्याम स्वामी की प्रेरणा से तथा युवक मंडल के सहयोग से श्री स्वामिनारायण अंक की वंश परंपरागत २० सभ्य तथा २३ वार्षिक सभ्य के नाम लिखाये गये हैं । *- प्रमुख, मंत्रीश्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

गोविंदपुरा (वेडा) श्री स्वामिनारायण मंदिर

गोविंदपुरा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. भक्तवत्सलदास (लींबडी) की प्रेरणा से ता. ७-१-०८ के दिन भव्य शाकोत्सव तथा तीन दिन की रात्रि पारायण स्वामीने की थी ।

शाकोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उनके वरद् हाथों से सब्जी का सुंदर छौंक करके सभा में सभी को दिव्य आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग में साधु वंदनप्रकाशदास, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडलने उत्तम सेवा की थी । *- कोठारीश्री*

वक्तापुर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ६-१-०८ के दिन भव्य शाकोत्सव संत-हरिभक्तो ने साथ मिलकर मनाया था । इस प्रसंग पर सत्यसंकल्पदास, उनावा के तथा प्रांतीज के महंत स्वामीने प्रसंगोचित कथावार्ता की थी । वक्तापुर, खेरोल, तोरणीया तथा कल्याणपुरा गाँव के हरिभक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिया था । *- कोठारीश्री*

डीसा (बनासकांठा) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा धोलका मंदिर के महंत शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ६-१-०८ के दिन मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया । जिसके यजमान पद का लाभ प.भ. अ.नि. वेलजीभाई धरमशीभाई चौहाण (जामसरःहालार) परिवारने लिया था । प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी, शा. चंद्रप्रकाशदासजी, शा. सिध्धेश्वरदासजी तथा दिव्य स्वस्मदासने शाकोत्सव प्रसंग की लीला के विषय में कथावार्ता की थी । *- गुणवंतभाई देवजीभाई*

आदिश्वर नगर नरोडा

श्री स्वामिनारायण मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास में अलौकिक महामंत्र धून प्रातः ५ से ६ की गई थी । ता. १३-१-०८ के दिन शाकोत्सव प्रसंग पर नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी तथा जमीयतपुरा, निकोल, कोटेश्वर तथा वहेलाल से संतोने पधारकर कथा का लाभ लिया था । इस प्रसंग में कौशिकभाई, महादेवभाई, जस्मिन, दिलीप, दिव्येश तथा जयेशभाई आदि सभी युवा तथा वयोवृद्ध हरिभक्तोने सुंदर सेवा की थी । *- बहादुरसिंह राओल*

पाटड़ी श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. २१-१२-०७ से ता. २५-१२-०७ दरमियान हरिभक्तोने टेन्ट्री, पाटड़ी, विरमगाम, मखीयाव, बावला, धोलका आदि प्रसादी के अलौकिक मंदिर में दर्शन करके धोलेरा मंदिर में ठाकुरजी के दर्शन करके पदयात्रा पूर्ण की थी । जिस में १३० जितने भाई तथा बहन जुड़ी थी । *- नारणजी तलाटी*

गोमतीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर

गोमतीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून हरिभक्तो के साथ मिलकर समग्र महिने की थी । *- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

महुन्द्रा मंदिर

उत्तर गुजरात के श्रीहरि के प्रसादी के राजपुर गांव में प.भ. गांडाभाई धनदास (वर्तमान फ्लोरिडा, अमेरिका) के पुत्र श्री बलदेवभाई, श्री महेन्द्रभाई आदि परिवार की तरफ से ता. १०-१-०८ से ता. १२-१-०८ तक प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीमद् भागवत पारायण की कथा स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर हुई थी । इस प्रसंग पर आचार्य महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे। बहनोके आग्रहपूर्ण आमंत्रण से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा बड़ी गादीवालाश्रीने पधारकर बहनो के अलौकिक दर्शन दिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति के बाद श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के नूतन मंदिर में विधिवत भूमि पूजन किया गया था । संचालन का कार्य शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया था । यजमान परिवार की तरफ से समस्त गाँव को प्रसादस्म भोजन कराया गया था । *- शा.नारायणवल्लभदासजी*

डांगरवा श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीहरि का प्रसादीभूत डांगरवा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर के पांचवे पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १७-११-०७ से १९-११-०७ तक श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य का त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. चन्द्रप्रकाशदासके वक्तापद पर हुआ था । इस प्रसंग पर डांगरवा के समीप में रहने वाले भक्तजन पदयात्रा करके डांगरवा पधारे थे । ता. १९-११-०७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । महाराजश्री के वरद् हाथों से पाटोत्सव की आरती एवं कथा की पूर्णाहुति की गयी थी । इस प्रसंगिक सभा में वाली मंदिर के देव स्वामी, शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी तथा अन्य संतोने प्रेरक प्रवचन किये थे । अंत में पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । *- कोठारीश्री*

मोटेरा में रात्री सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पवित्र धनुर्मास में ता. २२-१२-०७ से ता. ३०-१४-०७ तक रात्रि में ८-३० से ११-०० तक धीरजाख्यान की सुंदर कथा शा. रामकृष्णदास के वक्तापद पर हुई थी । ता. ३०-१२-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति की गयी थी । शाकोत्सव भी मनाया गया था । कथा के यजमान श्री बलदेवभाई फुलाभाई पटेल तथा शाकोत्सव के यजमान संकल्प ग्रुप था । समग्र आयोजन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । आयोजन छोटे पी.पी. स्वामीने किया था । *- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल मोटेरा*

पाटण बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव संपन्न

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाजी की आज्ञा से तथा सां.यो. भक्तिबा-हीराबा की प्रेरणा से यहाँ मंदिर के पाटोत्सव का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. १५-१२-०७ से १९-१२-०७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर मंदिर) के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ । प्रथम दिन प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारी थी । सभी बहनों को हार्दिक आशीर्वाद देकर सुखी की थी । रेखा बहन ठक्कर, प्रभा बहन सोनी तथा मीता बहन के घर प.पू. गादीवाला पधारकर सभी का घर पावन की थी । गांव-गांव से बहने पधारकर कथा का लाभ ली थी । सभा संचालन सां.यो. उषाबाने किया था ।

वसई डाभला श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास पर्यन्त महामंत्र धून एवं कथा तथा प्रसाद वितरण का आयोजन किया गया ।

ता. २१-१२-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था । प्रासंगिक सभा में विद्वान संतो ने प्रेरक प्रवचन किया । अंत में महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । *- रजनीभाई*

आमजा (बालवा) सत्संग सभा

आमजा गांव में ता. २३-१-०८ के दिन (अहमदाबाद मंदिर के दानपेटी में सेवा करने वाले) अ.नि. श्री रामाभाई रायसंगभाई के अक्षरनिवास के उपलक्ष्य में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया था । जिस में विसनगर से श्री उदयनभाई महाराजा तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवं गाँव के सदस्य-बालवा, बदपुरा, बापुपुरा, मकाखाड, माणेकपुरा इत्यादि गाँव के भक्तों की महाराजश्री ने तथा श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा की प्रसंशा की एवं भावभीनी श्रद्धांजलि दी थी ।- *श्री न.ना.यु.मं. बालवा*

ऊँजा (पंचवटी) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के पंचवटी श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास में करीब २४ वर्षो से प्रातः ५-६ तक श्री स्वामिनारायण नाम के स्मरण के साथ कीर्तनधून ऊँझा के गलियों में प्रभात फेरी के समय किया गया था । इस प्रसंग पर भक्तों को प्रसाद का वितरण किया गया था । इसके बाद मंगला आरती करके धुन, भजन, कीर्तन होता था । ता. १३-१-०८ के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । जिसमें बाल मंदिर के बच्चो को प्रसाद का वितरण किया गया था । *- रामजीभाई*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

मूली की ज्ञान बावली जहाँ पर स्वामी को मंदिर निर्माण के समय भरवाड़ का वेष धारण करके श्रीहरि ने पानी की समस्या दूर की थी उस बालवी एवं पत्थर की खान को बताई थी । उसी अलौकिक भूमि पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. ८-१-०८ के दिन भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर सुरेन्द्रनगर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी तथा मूली के श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से यह कार्य सम्पन्न हुआ । कई गाँवो के संत एवं भक्त इस कार्यक्रम में उपस्थित थे । इस प्रसंग पर शा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से युवक मंडल ने उत्तम सेवा की थी । *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव संपन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. १०-१-०८ के दिन भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से छौंक किया गया उस समय समग्र वातावरण दिव्य हो गया था । समग्र आयोजन युवा महंत शा.स्वामी हरिप्रकाशदासजीने किया था । शाकोत्सव की यजमान सां.यो. राजकुंवरबा तथा सां.यो. उषाबा तथा अन्य हरिभक्तांये की थी । प्रासंगिक सभा में संतो की प्रेरक वाणी का सभी को लाभ मिला था । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इस प्रसंग पर जेतलपुर से महंत के.पी. स्वामी, शा. माधव स्वामी, अहमदाबाद से वी.पी. स्वामी, विष्णु स्वामी, राम स्वामी, अयोध्या से योगी स्वामी, माधव स्वामी, मूली से जे.पी. स्वामी, अनिरुद्ध स्वामी, धर्मप्रियदास स्वामी, शा. रूपेशप्रसाद, हरिप्रिय स्वामी इत्यादि संत उपस्थित थे । *- वी.पी. स्वामी*

लींबड़ी तपोवन मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के पू.पी.पी. स्वामी तथा पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से साधु भक्तवत्सलदास तथा मूली देश के गाँवो में सत्संग शिबिर द्वारा कथा का आयोजन किया गया था । प्रश्नपेटी के संपादन शा.स्वा. भक्तिनंदनदास तथा जे.जे. भादेवड़िया द्वारा बालकों की प्रश्नोत्तरी स्पर्धा द्वारा ज्ञान में प्रेरणात्मक दर्शन दिया गया था । भक्ति स्वामीने देव, आचार्य महाराजश्री के प्रति निष्ठा की भावना पर खूब प्रकाश डाला । सम्पूर्ण धनुर्मास मंदिर में धून की गयी थी ।

- साधु वंदनप्रकाशदास - जेतलपुर वाड़ी

घनश्यामनगर (त. हलवद)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में महामंत्र की धून एवं कथा में, श्री नरनारायणदेव गद्दी के प्रति निष्ठा, मूली श्री राधाकृष्णदेव में निष्ठा भाव रखने के लिये हरिभक्तों को सूचन किया गया था ।

इस प्रसंग पर संत ने सुंदर प्रवचन किया । प्रतिदिन २०० जितने हरिभक्त धून का लाभ लेते थे ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल गोरधनभाई

भचाउ (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा भुज मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से धनुर्मास में नित्य प्रातः काल महामंत्र धून तथा ता. १३-

१-०८ के दिन भव्य शाकोत्सव परमाबहन शामजी करशन, निसर तथा दीवाली बहन भीमजी पुनसी, नीसर की तरफ से संपन्न हुआ । ता. १५-१-०८ के दिन प्रभात फेरी श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून करते करते गाँव में घूमी थी । इस प्रसंग पर गाँव के समग्र भक्तजन अलौकिक लाभ लिये थे ।

- बाबुलाल नानजी खुथीया

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में (I.S.S.O. अमेरिका) धनुर्मास समाप्त

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव आदि स्वरूपों के समक्ष मंगला आरती के पहले श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गई । जिस में दूर-दूर के चेरिटिल, एटलान्टीक सीटी, पारसीपेनी, न्युयोर्क, फिलाडेल्फीया तथा न्युजर्सी के हरिभक्तोने बड़ी संख्या में लाभ लिया था । मंगला आरती के बाद सभा में स्वामी विश्वप्रकादासने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्री पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ की कथा द्वारा सर्वोपरि श्रीजी महाराज तथा श्रीहरि का दिव्य धर्मकुल आचार्य महाराजश्री का महात्म्य उदाहरण सह समझाया था । श्रीहरि द्वारा स्थापित दो गद्दीओं की निश्रा में ही मोक्ष-कल्याण समझाया है । शिक्षापत्री के अनुसार स्वामीने समझाया था ।

- प्रविणभाई शाह

वोशिंगटन बुवी मेरीलेन्ड (I.S.S.O. अमेरिका) धनुर्मास समाप्त

I.S.S.O. चेप्टर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति की गति उत्तम है ।

१ दिसम्बर के दिन शनिवार की शाम २ बजे ठाकुरजी के समक्ष भजन-कीर्तन, वचनामृत (२७३) वाचन नित्य, भोग-आरती समूह में की गयी ।

२२ दिसम्बर के शनिवार को एक भव्य होल में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । ५ घंटे तक चली इस सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ इन्डिया से पधारे प्रयागराज मंदिर के कोठारी साधु धर्मकिशोरदास तथा हजुरी पा. कनुभगत आदि संत-पार्षद मंडल का स्वागत फुलहार से हरिभक्तों द्वारा किया गया । उसके बाद संतोने "आज मारे ओरडे" पद से सभा का प्रारंभ किया । श्रीजी महाराज-धर्मकुल की महिमा-महात्म्य की बाते तथा नंद संतो द्वारा रचित कीर्तनो को गाया । संतोने कहा कि अब से प्रत्येक महिने में होल में सभा की जायेगी । फिलाडेल्फीया तथा न्युजर्सी से हरिभक्त पधारे थे । चेरिहील-न्युजर्सी से हरिभक्त एक संत को लेकर आये जिससे हर महिने कथावार्ता का विशेष लाभ मिले ।

तीन दिन तक संत-पार्षदोने आरती, भोग, नित्य-नियम की उत्तम सेवा की ।

- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर पर्थ (ओस्ट्रेलीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग प्रचार हेतु पधारे स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा शा. रामकृष्णदास ता. ७-११-०७ से १०-११-०७ तक निरंतर ४ दिन सत्संग सभा का लाभ प्रदान किया । ता. ८-११-०७ रविवार की शाम को ३ से ६ तक बड़ी सभा का आयोजन करके संध्या आरती के बाद धर्मकुल तथा इष्टदेव की महिमा का गान किया गया ।

- मंत्रीश्री मनजीभाई शीवजी भंडेरी

लेस्टर (U.K., I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

लेस्टर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. २२-१२-०७ के दिन पवित्र धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण भगवान की समूह पूजा का आयोजन किया गया था । पूजारीश्रीने १०८ जनमंगल नामावली से पूजन प्रारंभ करवाया था । ४१ जितने हरिभक्तोने लाभ लिया । रात में ८ बजे पूजा पूर्ण हुई । बहनो द्वारा प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गयी थी ।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से लेस्टर मंदिर में बच्चो के लिये हर शनिवार की शाम को ७ से ८ तक सत्संग की प्रवृत्ति में सत्संग क्लासीस श्री हितेनभाई हिराणी तथा भक्ति संगीत श्री रतिभाई हिराणी के मार्गदर्शन से सुंदर चल रही है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से सत्संग की उत्तम प्रगति हो रही है ।

- सहमंत्री, किरण भावसार

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर : (वर्तमान में नाथद्वारा मंदिर) संत स्वामी गोविंदप्रसाददासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिश्चंद्रप्रकाशदासजी ता. २५-१-२००८ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये ।

अहमदाबाद : प.भ. कौशिकभाई ब्रजलालभाई पाटड़िया के पुत्र तथा प.भ. डॉ. हर्षदभाई झिंझुवाड़ीया भोणेज प.भ. हरि ता. १०-१-२००८ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये । श्रीहरि उनके परिवार को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

वडु : प.भ. सूरजबहन मगनलाल पटेल (जिन्होंने अपना किंमती मकान मंदिर को समर्पित कर दिया) ता. १०-१-२००८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : अ.सौ. शारदाबहन के. शास्त्री ता.१७-१-२००८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

आमजा : प.भ. रामाभाई रायसंगजी चौधरी (चांदीसणावाले गल्लापेटीकी सेवा करते) ता. १४-१-२००८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

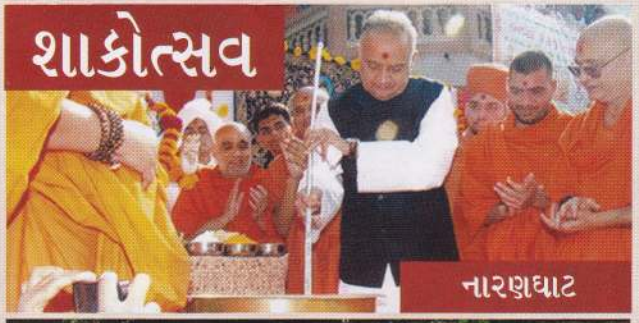
संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



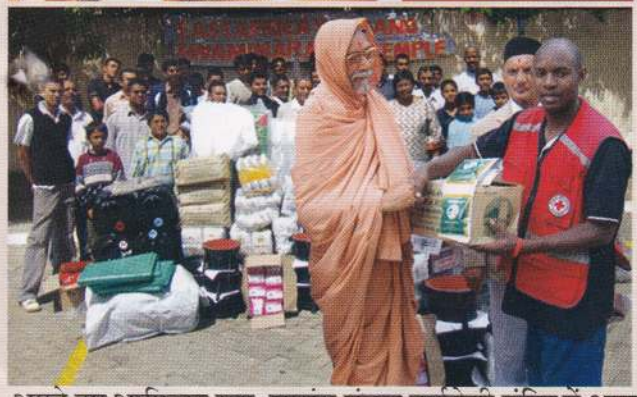
संत महादीक्षा देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री



कांकरिया-रामबाग निर्माणाधीन मंदिर की तस्वीर







अपने इष्ट आफ्रिका स्वा. सत्संग मंडल नाईरोबी मंदिर में असर ग्रस्तों के जीवन की आवश्यक वस्तुओं का वितरण करते हुए ज मंदिर के संतो के साथ श्री लक्ष्मणभाई राघवाणी





अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के शिल्प स्थापत्य का जोरशोर से चल रहा काम

Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 issued
SSP Ahd Valid up to 31-12-08





श्री रसिक भाई सोनी के यहाँ उत्तरायण के प्रसंग पर इन अलौकिक श्रीहरि के अपर स्वरूपों की जिसके पतंग पर दृष्टि पड़ी उसका निश्चित कल्याण हो गया

मुंबई विलेपार्ले अपना भुज मंदिर द्वारा संचालित विश्रांति भवन के दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर केक काटते हुए पू. महाराजश्री साथ में अलौकिक लाभ लेते हुए भुज के महंत स्वामी, शा.स्वा. भक्तिवल्लभदासजी एवं संत मंडल



श्री प्रवीणभाई कोटके के बोपल फार्म हाउस पर सत्संग युवा शिबिर प्रसंग पर पू. महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री क्रीकेट खेलकर संत-हरिभक्तों को प्रसन्न करते हुए



Prafful Kharsani